Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 14 vad 05 30 ebZ 2015 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से जाट आरक्षण बनाम सरकार की पक्षपातपूर्ण नीति

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

राष्ट्र की स्वतंत्रता से पूर्व 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के बाहरी ताकतों व शत्रु देशों द्वारा किए गए समस्त आक्रमणों में जाट समाज द्वारा किए गए संघर्ष व प्रयासों का गौरवशाली व वीरतापूर्ण योगदान रहा है। इस महान राष्ट्र की स्वतंत्रता प्राप्ति में व राष्ट्र की सुरक्षा, अखंडता व संप्रभुता को बनाए रखने में इस बहादुर कौम के अनेकों यौद्धाओं व सपूतों का वीरतापूर्ण बलिदान युवा पीढी के लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत व मिसाल बना रहेगा। सन् 1842-46 के इंडो-सिक्ख वार तथा अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर की अंग्रेजी हकुमत के खिलाफ लड़ी गई ऐतिहासिक लड़ाईयों में भी इस बहादुर कौम का अहम योगदान रहा है। आज भी जहां कही भी कोई शहादत होती है तो उसमें इस कौम के बहादुर देशभक्त नौजवान अपने प्राण तक न्यौछावर करने में अग्रणी पंक्ति में सदैव तत्पर रहते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात लड़े गए सबसे बाद के विदेशी आक्रमण-कारगिल युद्ध में भी देश की आन-बान व सुरक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर करने वाले सुरक्षा सैनिकों में केवल हरियाणा प्रांत से ही इस वर्ग के लगभग 85 सैनिक शामिल हैं। इसी प्रकार से ग्रामीण जनता विशेषकर दलित, गरीब व काश्तकार वर्ग के हितों के लिए स्वार्थी व अवसरवादी राजनीतिज्ञों का विरोध करते हुए एक निष्पक्ष व कल्याणकारी शासन की स्थापना करने वाले दीन बंधु सर छोटूराम, स्व0 चौधरी चरण सिंह व स्व0 चौ0 देवीलाल जैसे त्यागी व संघर्षशील एकछत्र नेता भी इसी मेहनतकश कौम से पैदा हुए हैं। वर्तमान में भी सरदार प्रकाश सिंह बादल, मुख्यमंत्री पंजाब व केंद्रीय मंत्री चौ0 वीरेंद्र सिंह किसान वर्ग व समाज के लिए बार-बार आवाज उठाते रहते हैं लेकिन मुख्यत: कृषि पर आधारित यह वर्ग हमेश ही स्वार्थी व पक्षपातपूर्ण राजनीति की किसान विरोधी नीतियों के कारण दिन प्रति दिन आर्थिक व सामाजिक तौर पर पिछड़ता जा रहा है जिस कारण इस वर्ग के स्वाभिमान व आजीविका को कायम रखने के लिए सरकारी सेवाओं में ओ.बी.सी. कोटे के तहत 27 प्रतिशत आरक्षण दिया जाना ही एक मात्र उपाय है।

ब्रिटिश सरकार द्वारा सन् 1931 में जातीय जनगणना के अनुसार इस वर्ग की जनसंख्या संयुक्त पंजाब क्षेत्र में 73 प्रतिशत, राजस्थान में 12 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 9.2 प्रतिशत, ब्लूचीस्तान में 1.2प्रतिशत, जम्मु-काश्मीर में 2 प्रतिशत, बम्बे प्रैसीडैंसी में 0.7 प्रतिशत, दिल्ली में 0.6 प्रतिशत, अजमेर मारवाड़ में 0.3 प्रतिशत आंकी गई है। वर्ष 1966 में पंजाब, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद व सन् 2001 की जातिगत जनगणना तथा अब तक के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार जाट, जट-सिक्ख, जाट मुस्लमानों, जाट-बिश्नोई, जाट ईसाईयों, जाट जैनियों आदि की आबादी सन 2001 में दर्शाई गई 1.2 करोड़ से बढ़कर अब 4 करोड़ से भी अधिक हो गई है। पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में इनकी जनसंख्या देश के अन्य राज्यों-जम्मु-काश्मीर, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से कहीं अधिक है।

'k"k ist&2 ij

Bhai Surender Singh MALIK Memorial All India Essay Writing Competition ON 04-7-2015

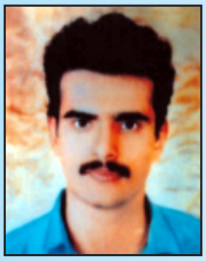

Jat Sabha, Chandigarh has been organising **'Bhai Surender Singh Malik Memorial All India on the Spot Essay Writing Competition'** for the College, University & 10th, 10+1 and 10+2 students every year. This competition is dedicated to the students in the sweet and everlasting memory of late Sh. Surinder Singh Malik, Electronic Engineer, who met with a Fatal car accident in the prime of his life (23 years) on June 5, 1993 and succumbed to the injuries on July 19, 1993. Rani of Jhansi died at the age of 23. Alexender the great died at the age of 23, Florence Nightingale died at the age of 23 and Shefali Chaudhary too died at the age of 23. We are thus reminded of the sad saying "Those whom God loves, die young. During his short of life, he had held high principles and moral values and the award is to envisage his high principles of life. The award will only go to the deserving and meritorious students whose essays are evaluated best by the judges. To keep his memory alive and to develop faith and trust in the younger generation, this competition is being held every year. Inspite of all the odds an effort has been made to show his silver lining in the black clouds to the students so that they develop a belief in themselves by winning the award. The competition is financed by Bhai Surender Singh Malik Institute of Medical Science and Educational Research, Nidani, District Jind Haryana. This prestigious competition carries the prizes for urban and Rural categories. This competition will be held on 02-7-2015.

विस्तृत पृष्ठ 4 पर

'k"k i!t&1

आज पंजाब की कुल आबादी का 45 प्रतिशत जाट वर्ग से है जबकि हरियाणा में इस वर्ग की जनसंज़्या 30 प्रतिशत के करीब है। राष्ट्रीय सर्वेक्षण संगठन के आंकड़ों के अनुसार अन्य पिछड़ी जातियों की जनसंज़्या पूरे देश में 36 प्रतिशत आंकी गई है और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य आंकड़ों के मुताबिक ओ बी सी की संज़्या पुरे राष्ट्र में 30 प्रतिशत है। इन्ही आंकड़ों को आधार मानकर आज सभी शिक्षा संस्थानों व सरकारी सेवाओं में 75 जातियों को ओबीसी के 27 प्रतिशत आरक्षण कोटे में शामिल किया गया है। इसलिए जाट आरक्षण पंजाब व हरियाणा जैसे जाट बाहुल्य क्षेत्रों में और भी वैध व जायज बन जाता है।

स्वतंत्रता के पश्चात पिछड़े वर्गों, अनुसचित जन-जातियों तथा अन्य गरीब वर्गों के उत्थान व कल्याण के लिए आरक्षण की सुविधा प्रदान करने के लिए भारतीय संविधान में प्रावधान किए गए हैं। यह प्रावधान 1993 के ओ बी सी अधिनियम में भी किया गया है जिसकी प्रत्येक 10 वर्ष बाद समीक्षा करके, अन्य पात्र वर्गों को आरक्षण की सूचि में शामिल किया जाना था लेकिन राजनैतिक स्वार्थों से आज तक ओ बी सी जातियों की पुनः समीक्षा नहीं हो पाई जिस कारण जाट वर्ग जैसे पात्र वर्गों का आरक्षण का लाभ नहीं मिल पाया। वर्ष 2014 में चुनाव से पहले आनन-फानन में राजनैतिक स्वार्थों के मद्देनजर सर्वेक्षण करवाया गया जो कि ठीक नहीं था

इस संदर्भ में अन्य पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने के लिए भारत सरकार ने 29 जनवरी 1953 को संविधान की धारा 340 के तहत काका केलकर की अध्यक्षता में एक कमीशन गठित किया जिसने 20 मार्च 1995 को अपनी रिपोर्ट सरकार को पेश की लेकिन कमीशन अपनी रिपोर्ट में पिछड़े वर्गों की पहचान करने के लिए आर्थिक व सामाजिक विषयों के अध्ययन में उलझा रहा जिस कारण यह रिपोर्ट संसद में पेश न की जा सकी और जाट वर्ग की पिछड़ा वर्ग को आरक्षण की मांग पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। इसके बाद भारत सरकार ने 1 जनवरी 1979 को बी पी मंडल की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया जिसने 31 दिसंबर 1980 को अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष पेश की। लंबे समय के बाद मंडल कमीशन की रिपोर्ट को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वी पी सिंह की सरकार द्वारा 13 अगस्त 1990 को लागू किया गया। मंडल कमीशन ने पिछड़ी जातियों की पहचान के लिए धारा 15(4) के तहत केवल दो शर्तो-आर्थिक पिछड़ापन तथा शैक्षणिक पिछड़ेपन को आधार माना जबकि सामाजिक पिछड़ेपन के आधार को नकार दिया। इसलिए केवल दो ही शर्तो के आधार पर अहिर, गुर्जर, सैनी, लोहार, कुज़्हार, सुनार, खाती व कंबोज आदि जातियों को पिछड़ा मानकर 27 प्रतिशत आरक्षण का लाभ प्रदान कर दिया और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वी पी सिंह की उप प्रधानमंत्री व किसान नेता जन नायक चौ0 देवीलाल के साथ अनबन होने के कारण रंजिशवश जाट वर्ग जैसी अन्य जातियां जो सामाजिक, शैक्षणिक पिछड़ेपन के साथ-साथ आर्थिक तौर पर काफी कमजोर है, को आरक्षण सं वंचित रखा, जिस कारण से समाज के अन्य वर्गों में मंडल आयोग की रिपोर्ट पर काफी हंगामा हुआ और रोषस्वरूप युवाओं ने आत्म हत्याएं तक कर डाली।

संविधान की धारा-15 डी व 16(4) के तहत राज्य सरकार द्वारा सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से पिछड़े नागरिकों विशेषकर जिनका सरकारी सेवाओं व शिक्षण संस्थाओं में बहुत कम प्रतिनिधत्व है, के लिए ओ बी सी कोटे के अंतर्गत आरक्षण का प्रावधान किया जा सकता है। इस संदर्भ में जन नायक स्व0 चौधरी देवीलाल के नेतृत्व वाली सरकार ने स्व0 चौ0 हुकम सिंह के मुज़्यमंत्री होते हुए हरियाणा सरकार ने 7 सितंबर 1990 को हरियाणा बैकवर्ड ज़्लास कमीशन (जस्टिस गुरनाम सिंह आयोग) की स्थापना की। इस आयोग ने सामाजिक, शैक्षणिक व आर्थिक आधार पर पिछड़े वर्गों का सर्वेक्षण करके व सभी कानूनी पहलूओं पर विचार करके हरियाणा सरकार को 31 दिसंबर 1990 को अपनी रिपोर्ट पेश की जिसके अनुसार अहीर, बिश्नोई, मेव, गुर्जर, जाट, जट-सिज़्ख, रोड़, त्यागी, सैनी व राजपूत जातियों को ओ बी सी कोटे के तहत आरक्षण सूचि में शामिल करने की सिफरिश की। कमीशन की रिपोर्ट को राज्यमंत्री परिषद से अनुमोदित करवाकर दिनांक 2 अप्रैल 1991 को अधिसूचना क्रमांक 395-एस.डबल्यु(I)-91 द्वारा यथावत जारी किया गया लेकिन उस समय सरकार बदल गई तथा नवगठित सरकार के तत्कालीन मुज़्यमंत्री श्री भजनलाल ने द्वेष भावना से जाट, जट-सिज़्ख, बिश्नोई, रोड़, त्यागी को छोड़कर आयोग द्वारा सिफरिश की गई अन्य सभी जातियों - अहीर, मेव, गुर्जर, सैनी आदि जातियों को ओ बी सी कोटे के तहत आरक्षण सूचि में शामिल कर दिया व सर्वोच्च न्यायालय में शपथ-पत्र दायर करके आरक्षण की अधिसूचना को रद्द कर दिया जो कि इस वर्ग के प्रति राजनैतिक भेदभाव को स्पष्ट दर्शाता है।

इसके पश्चात लंबे समय तक विभिन्न जाट आरक्षण संघर्ष समितियों व खाप पंचायतों द्वारा प्रदेश में ओ0बी0सी0आरक्षण पाने के लिए सड़क यातायात, रेलवे ट्रैक पर धरने प्रदर्शन किए गए जिसमें कई युवाओं को पुलिसया कार्यवाही से अपनी जान गंवानी पड़ी और प्रदेश में कोई 500 करोड़ का राजकीय कोष का नुकसान हुआ। इसके परिणाम स्वरूप वर्ष 2014 में केंद्रीय सरकार के सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय द्वारा 4 मार्च 2014 को अधिसूचना जारी करके बिहार, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उज़्राखंड, उज़्र प्रदेश व दिल्ली सहित 9 प्रदेशों में जाटों को अन्य पिछड़ा वर्ग की केंद्रीय सूचि में शामिल किया गया, लेकिन तत्कालीन केंद्रीय सरकार द्वारा लोकसभा चुनाव नजदीक आने व वोट बैंक के लिए जल्दबाजी में इस आरक्षण के संबंध में कई खामियां छोड़ दी गई जिस कारण ओ0बी0सी0 जाट आरक्षण के विरूद्ध याचिका दायर कर दी गई और फरवरी 2015 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कड़े संघर्ष के बाद हासिल किया गया ओ0बी0सी0 जाट आरक्षण रद्द कर दिया गया और इस प्रकार फिर से सरकार द्वारा इस वर्ग के सज़्मान व हितों को क्षति पहुंचाई गई है।

वर्तमान केंद्रीय सरकार द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में ओ0बी0सी0 जाट आरक्षण के खिलाफ दायर की गई याचिका की पैरवी में विशेष रूचि ना लेकर आवश्यक कार्यवाही नहीं की गई और आरक्षण रद्द होने के बाद सर्वोच्च न्यायालय में पुनः विचार याचिका दायर कर केवल इस महत्वपूर्ण मामले पर लीपा-

कमजोर गरीब की दु:ख भरी आह अभिमान को चूर्णा करने में समर्थ होती है। –'अज्ञात'

पोती का प्रयास किया जा रहा है जिससे जाटों को ओ0बी0सी0 आरक्षण में वांछित लाभ मिलने की संभावना काफी क्षीण लगती है। केंद्रीय सरकार अगर इस संदर्भ में वास्तव में गभीर है तो पिछली सरकार के समय इस अध्यादेश में छोड़ी गई कमियों को दूर करके इसको राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग से प्रमाणित करवाकर पुनः यथावत लागू करना चाहिए। एन सी बी सी एज़्ट 1993 की धारा-9(2) के अनुसार राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की सिफारिशों को मानना भारत सरकार के लिए अनिवार्य है और माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी 1992 के इंदिरा साहनी केस में अपने निर्णय द्वारा निर्धारित कर दिया कि एनसीबीसी आयोग की सिफारिशों का पालन करने को भारत सरकार बाध्य है।

यह विडंबना है कि वर्तमान केंद्रीय सरकार द्वारा भी जाट वर्ग के साथ आरक्षण मुद्दे पर दोगली नीति अपनाई जा रही है ज़्योंकि सज़ासीन केंद्रीय सरकार के एक सांसद द्वारा सरेआम जाट वर्ग के विरूद्ध मीडिया, समाचार पत्रों व सार्वजनिक तौर से घृणित व भड़काऊ बयान बाजी की जा रही है और जाटों को ओ.बी.सी. आरक्षण मिलने पर त्यागपत्र देने तक की धमकी दी जा रही है। केंद्रीय सरकार द्वारा इनके विरूद्ध कार्यवाही करना ता दूर सरकार के किसी भी सांसद व हरियाणा सरकार के किसी भी सज़ासीन विधायक द्वारा इस प्रकार की घटिया बयान बाजी की निंदा तक नहीं की गई। इससे प्रतीत होता है कि एक बार फिर से जाट वर्ग से आरक्षण का अह्म अधिकार छिनता नजर आ रहा है।

वर्ष 1999 में राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा गठित स्टेट कमीशन ने सर्वे करके रिपोर्ट दी थी कि जाट सामाजिक व शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े नहीं हैं फिर भी राजस्थान में जाटों को 27 अक्तुबर 1999 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा अधिसूचना जारी करके आरक्षण की सूचि में शामिल कर दिया गया। जाट आरक्षण के विरोध में आमतौर पर अन्य पिछड़ा वर्गों द्वारा प्रचार किया जाता है कि जाटों को ओबीसी कोटे में शामिल करने से आरक्षण के लिए निर्धारित कोटा 50 प्रतिशत से अधिक हो जाएगा और सर्वोच्च न्यायालय ने भी 16 नवंबर 1992 को इंदिरा साहनी व अन्य केस में निर्णय दिया था कि संविधान की धारा 16(4) के तहत कुल आरक्षण 50 प्रतिशत से अधिक नहीं दिया जा सकता। इस संदर्भ में यहां वर्णित करना उचित होगा कि तामिलनाडू सरकार समय-समय पर बाहुल्य जातियों की मांग पर सरकारी सेवाओं व शिक्षा संस्थाओं में आरक्षण बढ़ाती रही है और वर्तमान तालिनाडू में सरकारी सेवाओं में 69 प्रतिशत आरक्षण है और तामिलनाडू सरकार द्वारा 19 जुलाई 1994 को राज्य पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति व अनुसूचित जन जाति अधिनियम 1993, अधिनियम 45 आफ 1994 के तौर पर पारित किया गया है। इसलिए केंद्रीय सरकार द्वारा हरियाणा में पिछली सरकार द्वारा पारित ओ0बी0सी0 जाट आरक्षण बिल को केंद्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग से पास करवाकर पुनः लागू किया जा सकता है।

केंद्रीय व राज्य सरकारों के इस बहादुर व गौरवशाली जाट समाज के प्रति भेदभावपूर्ण व पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण केवल मात्र जाट जाति ही एक ऐसी जाति है जिसके लिए एक ही राष्ट्र में अलग-अलग संविधान बनाए गए हैं जिसे एक राज्य में तो पिछड़े वर्ग की सूचि में शामिल किया गया है जबकि अन्य राज्यों में इसी जाति को पिछड़े वर्ग से बाहर रखा गया है जो कि प्राकृतिक व सामाजिक न्याय एवं संविधान के विरूद्ध है। जाट कौम ही ऐसा वर्ग है जिसकों दो श्रेणियों में बांटकर मापदंड अपनाया गया है जो कि संविधान द्वारा प्रदज़ समानता के अधिकार की धारा 14 व 16 का उलंघन है।

एन सी बी सी की एक सलाह के अनुसार राजस्थान में तो जाटों को उज़र प्रदेश तथा बिहार के यादवों व कुर्मी के बराबर माना गया है और कहा गया है कि यह वर्ग आजादी से पहले व बाद में दमन का शिकार रहा है। लेकिन इसके विपरीत हरियाणा में यादवों का 1857 तक अपना रजवाड़ा व जागिरदारी रही है तथा राव तुलाराम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के हीरो तथा उस समय के शासक रहे हैं लेकिन फिर भी हरियाणा में यादव केंद्रीय सरकार की ओ बी सी की सूचि में दर्ज हैं। अतः इस प्रकार से पुनः जाटों को सरकार की स्वार्थपूर्ण, भेदभावपूर्ण नीति व अनदेखी का शिकार बनाया गया है और यही सिद्धांत राजस्थान के धौलपुर व भरतपुर के जाटों पर भी लागू होता है। इसी प्रकार पहले तो हरियाणा में जाटों को आरक्षण के नाम पर एन सी बी सी की आड़ लेकर ठगा गया और बाद में सरकार द्वारा गठित एन सी बी सी की सिफारिशों व सर्वे के आधार पर जाटों को दिए गए स्पेशल बैकवर्ड ज़्लास आरक्षण पर विरोधाभास पैदा करके आरक्षण के खिलाफ माननीय पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में याचिका भी दायर कर दी गई।

वास्तव में केंद्रीय सरकार के 27 प्रतिशत आरक्षण कोटा एक किसान कोटा है जो कि जाट वर्ग के इलावा गुर्ज्जर, सैनी, अहीर, बिश्नोई, बैरागी, लबाना व कंबोज आदि सभी काश्तकार जातियों के लिए बनाया गया है और जाट वर्ग अपने जैसी इन सभी जातियों के लिए सदैव आरक्षण की न्यायोचित मांग करता रहा है और इस वर्ग ने हमेशा अन्य सभी जातियों को आरक्षण दिलाने में भरपूर सहयोग दिया है लेकिन अन्य पिछड़ा वर्ग कुछ राजनैतिक ताकतों व स्वार्थी राजनीतिज्ञों के बहकावे में आकर जाट आरक्षण का विरोध कर रहे हैं। आज समय की जरूरत है कि केंद्रीय सरकार को अपनी सूझबूझ व विवेक से जाट आरक्षण के मुद्दे पर गंभीरतापूर्वक विचार करके किसान आरक्षण के तौर पर जाट वर्ग के लिए ओ0बी0सी0 जाट आरक्षण को पुनः लागू करना चाहिए।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय से लेकर अंग्रेजों के शासनकाल तथा सर छोटू राम के समय में भी इस बहादुर कौम के लिए सैन्य, अर्धसैनिक व सुरक्षा बलों में भर्ती के लिए कोटा आरक्षित रहा है लेकिन आजकल धीरे-धीरे केंद्रीय व राज्य सरकारों द्वारा भेदभावपूर्ण व स्वार्थपूर्ण नीति के तहत इस को खत्म कर दिया गया है। आरक्षण निर्धारण के लिए गठित किए गए मंडल कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट में जाटों को शैक्षणिक तौर से पिछड़ा हुआ माना है इसलिए उस समय अगर इस सर्वेक्षण के आधार पर भी जाटों को ओ बी सी आरक्षण सूचि में शामिल कर दिया जाता तो सेना व अर्द्ध सैनिक बलों में इस वर्ग की कम से कम एक लाख की नफरी का इजाफा होता। इसी प्रकार से इस वर्ग की मुज़्य

आजीविका-पुस्तैनी जमीन की जोतें बंटकर बहुत कम रह गई हैं। एक अनुमान के मुताबिक औसतन एक परिवार की जोत आज घटकर एक से डेढ़ एकड़ तक सिमट कर रह गई है वह भी सरकार की किसान विरोधी नीतियों के तहत एस ई जैड के नाम से औने-पौने दामों में खरीदकर धनाड्य कंपनियों को मंहगे दामों पर बेची जा रही है और वर्तमान केंद्रीय सरकार द्वारा लाए जा रहे भूमि अधिग्रहण कानून से तो इस वर्ग की पुस्तैनी कृषि भूमि को छीनने का रास्ता काफी आसान हो जाएगा जिससे इस वर्ग का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है।

इस वर्ग की पुस्तैनी जमीन का अधिग्रहण करने के बाद इनकी पुर्नस्थापना के लिए भी कोई कारगर योजना नहीं बनाई गई है जिस कारण यह वर्ग अपना कारोबार चलाने के लिए एक जगह से दूसरी जगह तथा कई बार तो अलग-अलग स्थानों पर जमीन खरीदकर गुजारा करने पर मजबूर हो रहा है। इस गौरवशाली समाज के साथ शुरू से ही विभिन्न सरकारों द्वारा भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया जाता रहा है। यहां तक कि ब्रिटिश सरकार द्वारा भी सन 1912 में दिल्ली को भारत की राजधानी स्थापित करने हेतू जाटों के 21 गावों को उजाड़कर उनकी कृषि भूमि को 99 साल के पट्टे पर लिया गया था जिसका आज तक पट्टा अवधि पूरी होने पर भी कोई भुगतान नहीं किया गया है। अंग्रेजों का राज चला गया लेकिन जाटों की जमीन पर कज़्जा करने का अभियान जारी है केवल इस अभियान का तरीका बदल गया है।

इसलिए इस वर्ग के लिए आजीविका के साधन बनाए रखने के लिए ओ बी सी कोटे के अंतर्गत दिए गए आरक्षण को पुनः बहान किया जाना बहुत आवश्यक है। इसलिए समस्त जाट समाज को अपने खोए हुए ओ.बी.सी. आरक्षण को पुनः प्राप्त करने हेतू समस्त जाट संस्थाओं, राजनेताओं व बुद्धिजीवियों की मदद से एकजुट होकर इस अह्म लक्ष्य को पूरा करने के लिए सांझे कार्यक्रम द्वारा केंद्रीय स्तर पर सुदृढ़ संगठन बनाकर संघर्ष करना होगा तथा विभिन्न संस्थाओं, खाप पंचायतों व संघर्ष समितियों द्वारा आरक्षण के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों को संयुक्त प्रयासों व मार्ग-दर्शन द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से चलाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही मेरा यह सुझाव है कि आंदोलन पूर्णतः शांतिपूर्वक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा दर्शाए गए अंहिसा के मार्ग के अनुसार चलाया जाना चाहिए जिसमें न तो आम जनता का और न ही सरकारी कोष का नुकसान हो। इसके साथ ही समाज के सभी चुने हुए जनप्रतिनिधियों-विधायक, सांसद, पार्षद आदि से भी विशेष अनुरोध है कि समाज के कल्याण व भलाई के लिए बढ़ चढ़कर जाट समाज को ओ0बी0सी0 आरक्षण दिलाने में भरपूर सहयोग प्रदान करें।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0 (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ज़्यूरो प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सज़्मान संघर्ष समिति

i`t&1 dk 'ks"k

Hkkbl lqjsUnz flag efyd ;knxkj vku nh LikV vf[ky Hkkjrh; fucU/k ys[ku çfr;ksfxrk & fnukad 04 tqykbl 2015

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला द्वारा दिनांक 04 जुलाई 2015 को सुबह 10 से 11 बजे तक कालेज, युनिवर्सिटी तथा दसवीं, 10+1 व 10+2 क्लास के विद्यार्थियों के लिए भाई सुरेन्द्र सिंह मलिक यादगार आन दी स्पाट अखिल भारतीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। प्रतियोगिता शहरी व ग्रामीण दो श्रेणियों में निम्नलिखित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

1. Ch. Bharat Singh Memorial Sports School Nidani, Distt. Jind (Haryana)
2. Bhai Surender Singh Malik Memorial Girls Sr. Secondary School, Nidani
3. Govt. Girls Sr. Secondary School, Shamlo-kalan, Distt. Jind (Haryana)
4. Govt. Girls Senior Secondary School Lajwana-kalan, Distt. Jind
5. Govt. Senior Secondary School Gatoli, Distt. Jind
6. Govt. Girls Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind (Haryana)
7. Govt. Senior Secondary School, Julana, Distt. Jind.
8. Govt. Senior Secondary School, Kilazaffar Garh, Distt. Jind
9. Gyandeep Model High School Sector 18, Panchkula
10. Bhavan Vidyalaya, Near Market, Sector 15, Panchkula
11. C.L. D.A.V. Sr. Secondary School, Sector-11, Panchkula
12. Moti Ram Sr. Secondary School, Sector-27, Chandigarh

इस प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागी किसी भी परीक्षा केन्द्र पर प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये आवेदन कर सकता है। प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम ईनाम 3100 रुपये व गोल्ड पदक, द्वितीय ईनाम 2100 रुपये व कांस्य पदक, तृतीय ईनाम 1500 रुपये व रजत पदक प्रदान किये जायेंगे। इसके इलावा 1000 रुपये, 900 रुपये, 700 रुपये व 600–600 रुपये के सांत्वना पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रतियोगिता हिन्दी या अंग्रेजी किसी भी भाषा में दी जा सकती है जो कि 1000 शब्दों से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।

प्रतिभागी अपने नजदीक के किसी भी परीक्षा केन्द्र में 20 जून 2015 तक आवेदन कर सकता है। निबन्ध का विषय प्रतियोगिता शुरू होने से पहले बताया जायेगा। परीक्षार्थीयों को परीक्षा के लिए केवल अपना पैन तथा कार्डबोर्ड लाना होगा जबकि उत्तर पुस्तिका केन्द्र पर उपलब्ध कराई जायेगी। विजेताओं को पुरस्कार बसन्त पंचमी तथा सर छोटूराम जयन्ती समारोह के अवसर पर प्रदान किये जायेंगे। इस प्रतियोगिता का सारा खर्च भाई सुरेन्द्र सिंह मैडिकल एजुकेशन तथा अनुसंधान निडानी (जीन्द) द्वारा वहन किया जायेगा।

Letter to the Prime Minister of India.

N0. JSC-2015/Aarkahan *dated: 22.05. 2015*

Sub: Highly Objectionable Remarks Made by Sh. Raj Kumar Saini, M.P, Kurukshetra (Haryana) Against Jat Community on Jat Reservation.

Hon'ble Pradhan Mantri Ji,

I am writing this letter with a view to draw your kind attention to uncharitable and hostile remarks being made by your Party's MP. I have rendered more than three decades distinguished service in Indian Army and then All India Police Service(IPS). After superannuating in the year 2006 as Director General of Police, Haryana, I am keeping myself constructively engaged in various social & philanthropic activities for betterment of the lives of people around.

The issue of reservation in Government jobs for Jat Community has been on the Centre stage for sometime now. Your Government at the Centre, as is being given out, is concerned about the matter and has been making efforts to extend this benefit to Jat Community as has been done to Other Backward Classes. The Jat Community appreciates your Government's action of filing a Review Petition in the Hon'ble Supreme Court of India to restore the OBC reservation.

Jat Community has always been helpful and cooperative to all 75 castes enlisted in OBC quota and has always extended all possible help to other communities for achieving their basic rights. It is unfortunate that a Member of Parliament where more than three lack fifty thousand Jats exist in his Constituency, is making malicious propaganda due to his vested interests from the very beginning of cancellation of OBC Jat reservation against bravest of the brave Community who always paid highest sacrifices for the sake of security and integrity of the Motherland. It is a crucial time for this brave Community and the entire Jat Samaj is already feeling cheated and humiliated from the cancellation of hardly achieved OBC reservation. Job reservation is a moral right of Jats and they are not demanding reservation as a gift from the government. Actually OBC reservation under 27% quota is a Kisan Quota and is exclusively meant for all agriculture based castes like Gujjars, Sainis, Ahirs, Bisnois, Kamboj, Bairagi, Labana etc. and Jats have always demanded this quota for the welfare of all such like-minded agriculture based castes. Jat Samaj has already become socially, educationally and economically backward due to continuous erosion of their land holdings. The entire Jat Society is totally dependent on agriculture which has become a losing profession due to heavy losses on account of continuous natural calamities and non receipt of adequate prices of their farm produce and it is becoming almost impossible for the people of this community to feed on agriculture alone.

Above all, denial of reservation to Jats under OBC quota is also a hostile discrimination to this Community as it amounts to violation of Article 14 & 16 of the constitution wherein the Jats already stand declared OBC in one State, Rajasthan. Hence, such situation do not exist for any other caste/community whereupon they are graded as OBC in one shape and the same community is graded as forward community in other parts of the Nation. It may kindly be seen that except all other castes in OBC reservation quota Jats are already governed by creamy layer policy, hence most of the population of this caste is economically backward and is almost in a starving situation.

This entire position was thoroughly debated in the Executive Committee meeting of Jat Sabha, Chandigarh/Panchkula on 10th May, 2015. It was unanimously resolved to lodge a complaint to your good self as well as to the BJP High Command against the communal & caste based remarks of Sh. Raj Kumar Saini, Member of Parliament (BJP) from Kurukshetra, (Haryana) from public platforms as well as through media during the last one month or so.

May I therefore, request your good self to kindly take suitable action against Sh. Raj Kumar Saini, MP so that he may not indulge in spreading communal hatred and create a situation of inter-caste disharmony.

With kind regards,

Yours sincerely,
Sd/-
(Dr. M. S. Malik)
President,
Jat Sabha Chandigarh/Panchkula

Shri Narender Modi Ji.
Hon'ble Prime Minister of India
New Delhi.

A copy of the above was also forwarded to **Sh. Amit Shah, National President, B.J.P. High Command, all Jat M.P.s and Ministers of Union Counsel of India** *for information and with the request to take up the matter with the B.J.P. High Command for taking necessary disciplinary action against Sh. Raj Kumar Saini, M.P., Kurukshetra (Haryana) for his anti-Jat and communal hatred remarks over OBC Jat Reservation.*

Sd/-
(Dr. M. S. Malik)

मैं चाहती थी, कुछ ऐसा करूं जो दूसरों के लिए उदाहरण बने

इरादे बड़े हों तो कामयाबी भी बड़ी हासिल होती है। एक और बात है कि कामयाबी कभी एक दिन की मेहनत से नहीं मिल जाती । इसके लिए लगातार पसीना बहाना होता है। भारतीय वायुसेना में फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप सिंह की मंजिल यही थी और इसके लिए उन्होंने बहुत पहले शुरूआत कर दी थी। खेल से जुडे माता-पिता की बेटी यह सफलता प्रेरक है।

दूरदर्शन पर एक समय उड़ान धारावाहिक को देखकर एक बच्ची के मन में घर कर गया कि मुझे भी कामयाबी की उड़ान भरनी है। हमेशा कहा-मैं खुद इस काबिल हूँ कि अपना रास्ता खुद बना सकूं और उन्होंने इसे साबित भी कर दिखाया। भारतीय वायुसेना में फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप सिंह की सफलता को जान उन माता-पिता के प्रति सहज ही श्रद्धाभाव जाग जाता है जिन्होंने अपनी बेटी को जीत का यह गुरूमंत्र दिया।

दरअसल कुछ ऐसे परिवार जो निरंतर इस प्रक्रिया में हैं कि उनकी बेटियां वहां पहुँचें जहां सम्मान और गौरव का ऊँचा ओहदा कायम है। हम यहाँ एक और बेटी की कामयाबी का जिक्र कर रहे हैं। भारतीय वायु सेना की सारंग टीम में पहली महिला इंजीनियर ऑफिसर होने का गौरव हासिल करने वाली संदीप सिंह उन युवतियों के लिए आर्दश है जोकि बड़ा मुकाम हासिल करने का सपना देखती हैं। संदीप सिंह कहती हैं-बचपन से ही मैंने अपना लक्ष्य तय कर लिया था - मुझे कुछ ऐसा करके दिखाना था जोकि दूसरों के लिए उदाहरण बने। हरियाणा बिजली नियामक आयोग के पूर्व सदस्य एवं बॉक्सर रहे टी.एस. तेवतिया बेटी की इस कामयाबी का आधार उसकी लगन और मेहनत को मानते हैं।

संदीप सिंह का वायु सेना के सारंग हेलिकॉप्टर के बेड़े में इंजनियरिंग ऑफिसर के तौर पर चयन साल 2014 में हुआ। वे इस समय स्क्वाड्रन लीडर दीपिका मिश्रा के साथ सारंग बेड़े को तकनीकी रूप से तैयार रखने की ड्यूटी अदा कर रही हैं। उनके मुताबिक 2012 में एमिटी यूनिवर्सिटी से बी.टैक करते हुए उन्होंने वायु सेना के सर्विस सिलेक्शन बोर्ड का एग्जाम पास कर लिया था। उन्हें शॉर्ट सर्विस कमीशन मिला। इसके बाद 8 दिसंबर 2012 को उन्होंने वायु सेना को जॉइन किया और 2014 में फ्लाइट लेफ्टिनेंट के तौर पास आउट हुई। उनकी बड़ी बहन सुप्रिया सिंह सीबीएसई की टॉपर रही हैं, वहीं उन्होंने एचसीएस भी कलीयर किया है। वे आजकल केन्द्र सरकार के बिजली मंत्रालय में कार्यरत हैं जबकि भाई सुनील सिंह अमेरिका से एमबीए कर रहा है।

संदीप सिंह की मां अनिता सिंह जिला खेल एवं युवा मामले अधिकारी हैं। वे इंटरनेशनल वॉलीबॉल चैम्पीयन हैं, कहती हैं संदीप हमेशा से ही आलरांउड़र रही है, खेल में, ड्रामा में, पढ़ाई में। एमिट से बी.टैक. करते हुए वह बेस्ट स्पोर्टस वुमन रही जबकि एयरफोर्स में प्रशिक्षण के दौरान भी उसे बेस्ट स्पोर्टस वुमन का खिताब मिला। अखिर, बेटी का नाम बेटों जैसा क्यों रखा? अनिता कहती हैं, संदीप के पिता ने बहुत पहले कहा था, हमारे घर बेटी हो या बेटा, नाम उसका संदीप सिंह रखेंगे। और जब संदीप का जन्म हुआ तो हमने यही नाम रखा। अनिता सिंह बताती हैं कि घर में क्योंकि खेल का माहौल था, इसलिए संदीप को भी खेलों के प्रति बेहद लगाव था, उसने हैंडबाल, वॉलीबॉल, डिस्कस थ्रो, जैवलिन थ्रो में विभिन्न स्तर पर शानदार प्रर्दशन किया। टी.एस. तेवतिया के मुताबिक खेलों में रूचि के बावजूद संदीप का लगाव नाटकों की तरफ भी खूब रहा था। अपनी पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने इन विद्याओं में भी खूब नाम कमाया। मुझे अपनी दोनों बेटियों की उपलब्धियों पर नाज है। हरियाणा में लिंगानुपात के आंकड़े बेहद खराब हैं, बेटियों के लिए क्या बहुत कुछ किये जाने कि जरूरत नहीं है? तेवतिया कहते हैं, मुझे लगता है, परिवारों को अपनी सोच को बदलना चाहिये। समाज का ढांचा ऐसा है कि बेटी शादी के बाद पराई हो जाती है, इसलिए माता-पिता को लगता है कि क्यों वे उसके लिए खर्च करें लेकिन यह गलत है। बेटियों से एक नहीं दो जहान फलते-फूलते हैं और वैसे भी संतान की तरक्की से माता-पिता को जो आनंद मिलता है वह बाहर कहीं नहीं मिलेगा। तेवतिया परिवार आजकल पंचकूला के सेक्टर-25 में रह रहा है।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट संदीप सिंह कहती हैं, जरूरतमंद बच्चों की मदद करना मैं। अपना फर्ज समझती हूं, जब भी समय मिलता है मैं मूक और बधिर बच्चों को पढ़ाती हूं। पिछले 6&7 वर्षों से मैं मेडिटेशन कर रही हूं। यह हर फील्ड के व्यक्ति के लिए जरूरी है, इससे फोकस मिलता है, मन शांत रहता और एक सकारातमक ऊर्जा मिलती है। मेडिटेशन से गुस्सा नहीं आता और आप अपने काम को बेहतर तरीके से अंजाम दे पाते हो।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM4 Jat Girl (DOB 15th Jan.1990) 25.4/5'3" M.Com., B.Ed. Doing M.Ed. from MDU Rohtak. Employed as PGT in private public school. Avoid Gotras: Hooda, Chhar, Malik, Cont.: 09876554488*
- *SM4 Jat Girl (DOB 1988), 27/5'2" M.A.(Economics Hons.) Pursuing Ph.D & taking I.A.S Coaching. Father employed in Haryana Government. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Rana, Cont.: 09988224040*
- *SM4 Jat Girl (DOB July 1990), 25/5'2" M.Tech. Avoid Gotras: Rangi, Kundu, Dahiya, Kuhar, (Indirect) Jatrana & Solanki, Cont.: 09466473021*
- *SM4 Jat Girl 26.6/5'3" B.A. Passed Steno, Hindi Computer course of one year. Employed as temporary clerk-typist in Haryana government. Avoid Gotras: Dhanda, Bhanwala, Punia, Chahal, Cont.: 09463653610*
- *SM4 Jat Girl (DOB 07th Feb.1990) 25/5'10" B.Tech. (ECE), M.Tech. (ECE) from M.D.U. Rohtak. GATE Qualified. Running own Coaching Centre for graduate level students. Father Public Prosecutor. Avoid Gotras: Kadian, Rathi, Sangwan, Cont.: 08447796371*
- *SM4 Jat Girl (DOB 13.09.1987) 27.6/5'5" M. Tech. Employed as Lecturer at Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahalawat. Cont.: 09996060345*
- *SM4 Jat Girl, (DOB 12.05.1988) 27/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan, Cont.: 08146082832.*
- *SM4 Jat Girl (DOB 24.09.1990) 24.8/5'5" .B.Com. M.Com. Pursuing B.Ed. Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran, Cont.: 08284050424*
- *SM4 Jat Boy (DOB12.03.1979) 36/5'4" Matric and ITI passed. Working as Electrician and settled at Pinjore. Avoid Gotras: Sangwan, Dabas, Sheoran, Cont.: 09996082544*
- *SM4 Jat Boy (DOB 14.09.1986) 28.8/5'11". Working as Senior Engineer in MNC Noida with Rs.10 lac PA. Preferred working match. Avoid Gotras: Tanwar, Jakhar, Sheoran, Cont.: 08284050424*
- *SM4 Jat Boy 26/5'8".B.Tech. from K.U., M.Tech from P.U. Working as Junior Manager in SML ISUZU Co. Delhi with Rs. 6 Lac. Package PA. own house at Zirakpur. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 08872856484*

ज्ञानदाता गुरू की निंदा करनी तो दूर, सुननी भी नहीं चाहिए। -'चाणाक्य'

सेवा के नाम पर घोटाला

HkjpUn tSu] ckM+esj

सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इसका भारतीय जनजीवन एवं आध्यात्मिक संस्कृति में बड़ा महत्व है। मानव सहयोग एवं जीवन दया के लिये सेवा को सर्वोपरि माना गया है। जब–जब भी प्राकृतिक आपदा अकाल, ओवृष्टि, भूखमरी, तूफान, आगजनी, भूकम्प, बाढ़, महामारी आदि का प्रकोप होता है, तब उसमें जन–धन की भयंकर हानि होती है। असंख्य अकाल मौत के आगोश में सो जाते हैं। कई शारीरिक रूप से विकलांग हो जाते हैं। उनके सामने भरपेट भोजन व पानी के लाले पड़ते हैं। जो कभी किसी के आगे हाथ नहीं पसारते थे वे भी प्राकृति आपदा से पीड़ित एवं प्रभावित होकर दर–दर की ठोकर खाकर भीख मांगने को मजबूर हो जाते हैं। प्रकृति प्रकोपों एवं विपदाओं/आपदाओं से पीड़ित इंसान सहित सभी जीवों की सेवा करना सर्वोपरि धर्म समझा जाता है। इसे लेकर समाजसेवी नाना प्रकार की स्वयंसेवी संस्थाऐं खोलकर उसके मंच से तन, मन एवं धन से सेवा करने का सौभग्य प्राप्त करते हैं। जो वास्तविक रूप से पीड़ित की निःस्वार्थ सेवा करते हैं वे पुण्य के भागीदार होते हैं। लेकिन आजकल आपदा–विपदा, प्रकृति प्रकोपों से पीड़ितों की सेवा के नाम पर लोगों ने अंधाधुंध सेवाभावी संस्थाएं, स्वयंसेवी संस्थाएं खोलकर उनके माध्यम से अपना घर भरने के लिए घपले करने में भी नहीं चुकते। ऐसे गड़बड़ घोटाला करने वाले स्वयं सेवी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत रूप से सेवा करने वालों की बाढ़–सी आ गई है।

सेवा के नाम पर नैतिकता, चरित्रता, सदाचार, शिष्टाचार, व्यवहारिकता, सहयोग, सहानुभूति को ताक पर रखकर इसके नाम पर मालामाल होने के लिए भ्रष्ट से भ्रष्ट आचारण अपनाने शुरू कर दिये हैं। ऐसी स्वयंसेवी संस्थाऐं जिनके सेवाभावी कहलाने वाले व्यक्ति कार्यकर्त्ता के पास साईकिल रखना आर्थिक रूप से संभव नहीं था। आज उनके पास आगे पीछे दौड़ने के लिए अपनी कईं चार पहिया कीमती से कीमती गाड़ियां उपलब्ध हैं। जो स्वयं इनके मालिक बनकर साधारण टूटे–फूटे अपने अपूर्ण आवास के स्थान पर अब आधुनिक भौतिक साधनों से परिपूर्ण भवनों, बंगलों, कोठियों में शान–शौकत से रहने लगे हैं।

अभावों, आपदा, विपदा, संकट की विभिन्न स्थिति से त्रस्त जनमानस एवं जीव मात्र की सेवा करने के लिए कई लोग अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए स्वयं सेवी संस्थाएं खोलते हैं। इस प्रकार की कईं स्वयं संस्थाऐं नारी उत्थान, वृद्धसेवा, पशु देखरेख, बालसेवा केन्द्र, चिकित्सा–स्वास्थ के नाम पर, शिक्षा की ओट में खोले हुए हैं और खोलने की फिराक में रहते हैं। इसके पिछे निष्ठा एवं ईमानदारी से पीड़ितों की सेवा करना नहीं अपितु अनेक प्रकार से धन बटोरने की फिराक में रहते हैं। स्वयसेवी संस्था के माध्यम से फर्जी बिल बनाकर सरकार अथवा अन्य सेवाभावी संस्थाओं से धन बटोरने की ताक में रहते हैं। कम खर्च कर अधिक रकम के बिल उठाना इनकी आदत बन गई है। संस्था के लिए खरीद की जाने वाली सामग्री में से चौथ वसूली करना इनका धर्म बन गया है। काम नहीं करवाकर उसके नाम से धन हड़पना इनका पेशा बन गया है। सेवा के नाम पर अधिक से अधिक भ्रष्ट आचारण से धन बटोर कर समाजसेवी कहलाने वाले कथित लोगों ने पेशा बना लिया है।

सेवा के नाम पर भ्रष्टाचार करने वालों पर लोभ का भूत सवार रहता है। इन्हें किसी प्रकार की बदनामी की चिंता नहीं। आलोचना से कभी विचलित नहीं होते। संस्था में पैसा हड़पने के लिए पद पाने के लिए अनैतिक से अनैतिक आचारण करने एवं अपनाने में इन्हें तनिक भी शर्म नहीं आती। ईमान इन्होंने पैसे के लोभ में गिरवी रख दिया है। इन्हें तो अनेक प्रकार से पैसा इकठ्ठा करने का भूत सवार रहता है। इस कारण कई स्वयंसेवी संस्थाऐं एकाधिकार के रूप में बपौती बनी हुई हैं। कुछ संस्थाऐं बदनामी की सारी सीमाऐं लांघ कर शर्ममय बन चुकी हैं। कई संस्थाओं पर अनाप–शनाप धन के गबन के आरोप लग चुके हैं और जांच के दायरे में अपने को बचाने के लिए भ्रष्ट आचरणों, अनैतिकता, राजनैतिक सहारा लेकर भ्रष्टाचार की नींव को पार पाने की ताक में भ्रष्टचार एवं व्यभिचार का सहारा लिये रहते हैं।

स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा सेवा करने के लिए बाढ़–सी आ गई है। कई संस्थाऐं भ्रष्टाचार में लिप्त रहते राजनैतिक वृद्धहस्त से मालामाल होकर मौज–मस्ती से दोनों हाथों से धन लूट रही हैं। स्वयंसेवी संस्थाओं में कार्य करते लोगों, कार्यकर्त्ताओं को मालामाल होता देखकर राजनीति में दखल रखने वाले नेताओं ने अपने परिजनों, रिश्तेदारों आदि के नाम पर संस्थाऐं खोलकर उन्हें राजनैतिक पनाह देकर खूले आम लूटने का अवसर दे बैठे हैं। आज स्वयंसेवी संस्था जो कार्यरत है उनमें से एक आध को छोड़कर सभी बदनाम हैं, भ्रष्ट हैं, अनैतिक कार्यों में लिप्त हैं और यदि उनकी राजनैतिक दबाव से हटकर खूली जांच करवाई जाये जो हजारों नहीं, लाखों को छोड़कर करोड़ों रूपये के गबन की पोल खुल सकती है। बस इसके लिये निष्पक्ष, सेवाभावी, नेक, ईमानदार, सदाचार व्यक्तियों से जांच करवाने की आवश्यकता है।

बेसहारा, पीड़ितों, अपाहिजों, दर्द से परेशान, भूख से तड़फते, पानी के लिये भटकते प्यासों, अत्याचार, अनाचार आदि विपदाओं, आफतों, मुसीबतों से प्रभावित लोगों की यदि लगन, निष्ठा, ईमानदारी, सद्भावना, संवेदना, करूणाभाव से सेवा की जाती है तो उसका लाभ पीड़ितों को निश्चित रूप से मिलेगा। ऐसी स्थिति में उनके पीड़ित दिल की आहें दुवायें आपको बारम्बार आशीष देंगी और आपके दीर्घायु होने की मंगल कामना करेंगी। यदि स्वयंसेवी संस्था के सेवाभावी लोग ऐसा आचरण वास्तविक रूप से व्यवहार में करते हैं तो वे सेवाभावी के रूप में न केवल वर्तमान समय में पूजनीय बने रहेंगे अपितु , भविष्य में भी उनकी सेवाभाव भावना की स्मृतियों सदियों तक जन मानस के पटल पर चर्चा की चोपाल बनी रहेगी।

सेवा के नाम पर धन का अभाव न सदियों पहले था और न ही वर्तमान समय में है। यदि सच्चे मन से पीड़ितों, अपाहिजों, असहायों की सेवा की जाये जो दानदाता–भामाशाहों आदि कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं की तिजौरियों के पट्ट खुले रहते हैं। बस इसके लिये निष्ठावान, ईमानदार, सेवाभावी लोगों को पहल करनी चाहिये। यदि सेवा के नाम पर कोई भी भ्रष्टाचार को आश्रय देता है उनका सामाजिक स्तर पर न केवल बहिष्कार होना चाहिये अपितु उसको कड़ा से कड़ा दण्ड देने की व्यवस्था रहनी चाहिये, ताकि सेवा के नाम पर लूट–खसोट, घपला, चोरी करने वाले सेवा नाम पर चलने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं को भ्रष्टाचार के अड्डों के रूप में बदनामी से बचाया जा सके। यदि ऐसा होता है तो सेवाभावी स्वयंसेवी संस्थाओं के सेवा उद्देश्यों की निश्चित रूप से पूर्ति होगी और पीड़ितों, अपाहिज, असहायों आदि की वास्तविकता सेवा हो सकेगी। जिसकी भारत देश को आवश्यकता है।

आदर्श, आदर्श ही रहता है, यर्थात नहीं हो सकता। –'प्रेमचंद'

What Ails the Indian Railways?

R.N. Malik

Indian Railways (IR) is the biggest government organization in the country. It has a work force of 14 lac people and runs daily 8000 trains to ferry 14 million passenger and 6.1 million tons of freight to 8000 stations. But most unfortunately the financial health of IR is very poor and is struggling below the poverty line. 93% of the receipts are used in disbursement of salaries and defraying electric and other maintenance charges and very little amount (Rs. 10,000 crore) is left for expansion and modernization of projects. The Finance Minister also allocates a meager sum (Rs 26000 crore last year) in the general budget and even that amount does not reach in full measure at the fag end of the year because of cuts. Only this year a sum of Rs. 50,000 crore has been allocated and let us hopes it is fully utilized by the year end. Many committees were set up by the successive governments to suggest re structuring of IR but all such reports were thrown into the dustbin of history. Now Vivek Debroy, (Member NITI Aayog) has submitted another interim report and nobody knows it fate.

IR suffers from 7 main maladies which are not allowing it to move towards excellence. These are:-

1. *Poor Financial Health.*
2. *In-efficiency.*
3. *Missing links and gross under utilization of 60% railway tracks.*
4. *Choking of busy routes.*
5. *Slow progress in electrification and doubling of tracks.*
6. *Insanitation.*
7. *Lack of limited participation of private sector.*

There are many more problems like inadequate number of freight wagons which need not be discussed in this article.

Successive Railway Ministers, Chairmen of the Railway Board and bureaucrats are responsible for keeping the IR struggling in this sorry state of affairs even 68 years after independence. Worst period of IR came when Mamta Bannerjee became the Minister and she operated from Kolkata. It was reported by Hindustan Times that monthly TA bills of officials of the Ministry to go and come back from Kolkata was Rs. 11 lac per month. The present Minister Sh. Suresh Prabhu is known for hard work and honesty. Let us hope he gives new wings to the IR to grow and expand in future.

But, this year, Mr. Suresh Prabhu, presented the Railway Budget in a very strange manner. In fact he presented a 5 year budget i.e. 2015-2020 with only one main provision of doubling and electrifying the railway tracks @ 2000 kms per year or 10,000 kms by the year 2020. No new trains or lines were announced and he strangely calls this step as the biggest reform. This decision has greatly hurt the feelings of the common man. This is because it is the intense desire of everybody to travel by train and its journey should be as comfortable and ambient as possible. He travels by bus or any other mode only by compulsion.

The Railway Minister further stated in his budget speech that he required Rs. 1.7 lac crore to complete this big ticket (Electrification and doubling of tracks) project and is working hard to marshal the necessary resources. It is heartening to note that LIC has offered a loan of Rs. 30,000 crore for this project and the Railway Minister is confident of arranging the balance funds. This project too will be another feather in the IR cap provided it is executed in time. But the budget is totally silent on other gnawing issues of IR.

Building eastern and western freight corridors at a cost of Rs. 90,000 crore has become a separate project. The work has started in installments but there is no target date by which the project will be completed and commissioned. It will be a big leap forward provided this project is executed in time like DMRC project and counted as the second big success story after the DMRC project.

Seven maladies hampering the growth of IR are discussed below:

1. Poor Financial Health:- *The basic cause of poor financial health of IR is low railway fares. The ordinary bus fare from Delhi to Chandigarh is Rs. 219 while that of mail train for the same class is only Rs. 85/-. The fare in passenger trains is simply notional. Again for example, the fare between Delhi and Rohtak is just Rs. 22/- while the bus fare is Rs. 65/-. After a gap of many years, the government raised the passenger fare by 20% last year. This rise in fares only fetched Rs 6,000 crores and it hardly made any impact on the financial health of IR. Fortunately the prices of crude oil crashed down to 50% and this fact saved the situation to some extent. The pass holders enjoy almost a free ride as they have to pay for only 8 tickets per month. To add to the woes further, large numbers of passengers travel in local trains without tickets. Now the government does not have the guts to increase the fares anymore and put a complete check on ticketless travelling. The International price of crude oil has started rising and now it is $ 67 per barrel. Accordingly the price of diesel oil has been increased by Rs. 3.10 per liter. Consequently one cannot hope any improvement in the financial health of IR in the near future and it will remain anemic as in the past. It may be easy to get loans from LIC or World Bank but it will be very difficult to pay-off the same so long as the IR does not increase its fares to the required extent.*

2. In efficiency: - *IR is a behemoth organization. There is always a limit to the size of an organization to deliver optimum efficiency. IR has outgrown that optimum size and this outgrowth is the main cause of its in-efficiency and many other associated problems. This gross in-efficiency is most reflected in the non- punctuality in running of trains (which is worst on secondary routes) and under utilization of 60% railway tracks. IR has completely monopolized the railway system and is not ready to give an inch even to the States. Thank God! Indian government does not run the bus service likewise. No other big country runs the railway service in this monopolized manner. Even sub-urban trains in Mumbai and Kolkata are run by IR. Time has come when states should be made stake-holders and allowed to run trains within their respective territories and IR should run only interstate trains. For example what is the harm if Haryana Government is allowed to run a train between Hissar and Gurgaon. It is a very busy route and presently being served by the bus service only. This part transfer of railway service to states should be gradual over a period of 5 years. This step will prompt the people to travel more by trains than buses. Also trains can be run by electricity and this step will lead to massive saving in*

consumption of diesel oil with consequent saving in foreign exchange. Therefore each state needs to run less number of buses and more number of trains. In other words IR will become a very efficient organization provided it runs only inter-state trains and downsizes itself. The train service under state control will ensure 5 benefits.

(a) 60% underutilized tracks will be fully utilized.

(b) The competition between railway service and bus service will be eliminated.

(c) The trains on less important routes will run very efficiently and run punctually.

(d) Ticket less traveling will be completely eliminated.

(e) The states can fix their own fares to make the running of trains a profitable proposition.

The Railway Ministry should realize and visualize that India is a very vast country equivalent in size of European Union and operation of train service should be designed on that pattern. In other words each state should be treated like each country of the European Union and allowed to run its own train service within its territory and IR should run only interstate trains. Time has come when IR will have to decentralize itself the way State Electricity Boards were decentralized and unbundled under the Electricity Act 2003.

3. Missing links and under utilization of 60% tracks :-

(i) Every state has some missing railway links/gaps in the existing railway network. For example a train from Hissar cannot go to Chandigarh till a railway link of 25 kilometers is provided between Uklana and Narvana. Likewise a train from Ferozepur cannot go to Amritsar till a missing link between Patti and Miyanwala is laid. There are innumerable examples of such missing links throughout the country and their total length is not more than 2000 kilometers.

(ii) Under utilization of railway tracks: - *The tracks are either over utilized or underutilized in the existing railway network. For example Delhi Kolkata track is so busy that it becomes extremely difficult to get a permit to repair any defect in the track. On the other hand 60% tracks are grossly underutilized where hardly 2-3 trains run during the day. It is this problem which adds to the losses of IR. To give one example- A new 50 km railway track was laid between Rewari and Rohtak at a cost of Rs 600 crore. Hardly 2 trains run on this track and the staff on various stations simply whiles away the time. Similarly Narvana- Kurukshetra track of 80 Kms is also equally underutilized. Therefore under utilization of 35000 km tracks is a big issue with IR and its solution lies in one order of the government i.e. "Allow the states to run trains within their territories." This order will revolutionize the IR.*

4. Choking of Bus Routes*:- Delhi-Mumbai, Delhi- Kolkata, Delhi-Ambala are some of the busiest routes in IR network. It is becoming impossible for trains to run punctually on these saturated routes. For example Chandigarh-Delhi Shatabdi runs according to time schedule till Narela. But it takes lot of time to cross the distance between Narela and New Delhi Railway Station. Same is the situation in other directions i.e. Delhi-Ghaziabad or Delhi-Faridabad. This problem can be solved in two phases only. Firstly new fast track routes should be laid between Delhi-Kolkata and Delhi-Mumbai to enable a train to give an average speed of 150 Kms per hour. Secondly Delhi railway stations should be de-congested by terminating some trains at peripheral points e.g. Narela, Ghaziabad, Ballabgarh railway stations. It is learnt that the two freight corridors will run only freight trains and let us see to what extent we get relief in the absence of freight trains on the existing routes.*

5. Electrification and Doubling of tracks*: Presently 35% railway tracks (21000 km) have been doubled and electrified. Present rates of electrification and doubling of tracks is only 200 kms per year. Now the Railway Minister has said in his budget speech that 10000 kms more railway tracks will be doubled and electrified by 2020. Timely execution of this project will have two domino effects.*

i) Number of trains running with diesel engines will be greatly reduced.

ii) Punctuality in running of trains will be enhanced.

Let us hope the Railway Minister holds his promise.

6. Insanitation:- *The term "Insanitation" has become synonymous with IR. Firstly the toilets in ordinary coaches are always stinking. Both the interiors and exteriors of the compartments are stained with spitting. Railway tracks have become the most coveted places for open defecation. Solid waste generated in the towns near the tracks is dumped there. The sewage and sullage water of un-authorized colonies along the railway tracks gets collected in the railway land. Orthodox system of disposal of human excreta from the tracks at the railway stations leaves much to be desired. In foreign countries the toilets in the train get automatically closed as soon as the train arrives at the station. IR needs to do a lot to remove the stigma of insanitation.*

7. Lack of limited participation of Private Sector:- *It was learnt through the press notes that Vivek Debroy Committee has recommended large scale privatization of railway services. Mr. Suresh Prabhu, the Railway Minister has rightly rejected this recommendation on the ground that a bulwark built over a period of 150 years cannot be given to private hands. More over the privatization of routes in Indian skies has crippled AIR-India.*

But limited private participation will definitely benefit IR. For example what is the harm if a private player is allowed to run a Rajdhani like train between Delhi and Guwahati with certain terms and condition of payment for the use of IR railway tracks? In fact private sector should be given shorter routes with DMRC like trains as Hisar-Gurgaon or Narvana- Kurukshetra. As already suggested the short routes should be under the state control and this limited private participation will not be able to affect the IR economy. It will only improve it. Metro type coaches attract the maximum number of passengers and hence make local train service a profitable proposition.

Non-solution of these seven issues is keeping the IR in a constant state of poor health. Pussillaminy of successive Railway Ministers and Chairmen of Railway Boards are responsible for this state of affair. Presently Railway Minister is the man of different disposition and let us hopes if he can rechristen the IR into a DMRC type success story. Looking at the International standards IR falls in a very low category. By now our railway service should have been clean, punctual, comfortable and ambient. But I must say 50% of IR problems will be solved if states are allowed to run trains within their respective territories. This change-over will revolutionize the Indian Railways. There is no other shortcut to improve the health of IR and save it from further ignominy.

एक 'नई पार्टी' आई है!

प्रोफैसर शेर सिंह सांगवान

सुनो-२, हे भारतवासियो एक नई पार्टी आई।
दिल्ली के जनमानष ने 'दिल' से वह अपनाई ।।

इस पार्टी के नेता व मंत्री, दूसरों से निराले।
ना गाडी पर लालबती, ना ऑखों पर चश्मे काले।।
इनकी पहचान 'आम आदमी' सिर पर टोपी वाले।
जनसाधारण से उभरे हैं, ना राजनैतिक खानदानों ने पाले।।
इस पार्टी ने प्रथम चुनावी प्रयास में दिल्ली में पहचान बनाई। १

इनका नारा है, शासन में 'आम आदमी' की हो भागीदारी।।
भ्रष्टाचारियों पर हल्ला बोलें- चाहे वह नेता हो या कर्मचारी।
पार्टी के नेताओं में चोर को चोर कहने की हिम्मत भारी।।
बेईमानों को पार्टी का 'खोफ' चाहे वो हो आला अधिकारी।
पार्टी ने अल्पावधि में, भ्रष्टाचार विरोधी देशव्यापी छवि बनाई।। २

इस पार्टी के उदगम से, वी आई पी नेताओं में मची खलबली।
उन्हें लगता है, कोई 'अनजान' आ गया उनकी 'गली'।।
विरोधी भी एक जूट हो गये, प्रथम आप सरकार केवल ४६ दिन चली।
जनता से वायदों हेतु, मंत्री पद छोड, आप वाले आ गये गली-गली।।
आप के इस त्याग ने, पार्टी में लोगों की आस्था दुगनी बढ़ाई।..... ३

भ्रष्ट नेताओं ने 'आप' को खत्म करने के सभी प्रयास लगाए।।
इस प्रयास में राजनैतिज्ञों ने स्वार्थी उद्योगपति भी साथ मिलाये।
कारपोरेट संचालित मिडिया ने भी धुआंधार दूष्प्रचार चलाये।।
परन्तु भ्रष्ट नेता व स्वार्थी चैनल, जागरूक जनता को नहीं बहका पाये।
आम आदमी ने ली अंगड़ाई और 'आप' ७० में ६७ सीट दिलाई।। ४

अब दिल्ली की 'आप सरकार' को चुनौती है भारी।
विकट परिस्थतियां हैं, राजनीति प्रेरित, बेतुका विरोध है जारी।।
विरोधों के बावजूद, 'दिल्ली सरकार' आगे बडे, कहती जनता सारी।
दिल्ली में परफोरमैन्स पर, देशव्यापि बनेगी एक पार्टी न्यारी।।
'सांगवान' कहे, भ्रष्ट ताकतें जान लें, अब आम आदमी में भी समझ आई।

अधिकारों का सच्चा स्त्रोत कर्तव्य है। अगर हम सब अपने कर्त्तव्य पूरे करे तो अधिकारों को ढूंढने कहीं अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। –'महात्मा गांधी'

जाट ही तो है धर्मनिरपेक्षता का सही स्वरूप

& vkeçdk'k

आजादी के बाद देश में जाटों को मिला ही क्या है? और भविष्य में कुछ मिलने की उम्मीद ही क्या? जाट ने कभी ब्राह्मण गैर–ब्राह्मण का नारा नहीं लगाया, जाट ने कभी बनिये गैर–बनिये का नारा नहीं लगाया, जाट ने कभी हरिजन गैर–हरिजन का नारा नहीं लगाया तो फिर ये सब जाट के विरूद्ध अलगाव की बोली बोलकर जाट को देश से बाहर निकालने की साजिश क्यों कर रहे हैं? जाट तो धर्म निरपेक्षता को साम्प्रदायिकता के हाथों क्यों कत्ल करने पर उतारू हैं? जाट देश भगत है, जाट स्वामी भगत है, जाट वैदिक धर्मी है तथा उन वेदों में ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, पोपलीला, ठगी, लूटमार, शोषण, झूठ, धोखा–धड़ी व हेरा–फेरी का कहीं कोई जिक्र नहीं है। जाट अपने उसूलों को छोड़ नहीं सकता और ये अपने पाखंड को नहीं छोड़ सकते। जाट कमा कर खाना चाहता है ये ठग कर और लूट कर खाना चाहते हैं। फिर इन तिलक, तराजू और त्रिशूल वालों के साथ जाट कैसे निर्वाह करें, कितने दिन इनके साथ लड़े और इनका मुकाबला करें? ये तो पिस्सू हैं, हर स्थान पर मिलते हैं, हर मज़हब में मिलते हैं, इन्हें प्रत्येक प्रकार की चालाकी और हेरा–फेरी आती है, जाट इनके बीच में एक भोला–भाला जीव फंसा हुआ है, ये हर दम जाट शोषण करने की ताक में रहते हैं। जाट हजारों वर्षों से इनकी बेईमानी, इनके अधर्म के विरूद्ध लड़ता चला आ रहा है परन्तु ये मुफ्त खोरे हर स्थान पर मिल जाते हैं।

महात्मा बुद्ध ने जब यह देखा कि जानवरों की बलि दी जा रही है, मनुष्यों को भी बलि का बकरा बनाया जा रहा है, तो उन्होंने हिंसा के विरूद्ध लोगों के बीच में अपने विचार दिये, समाज में अंधाधुंध हिंसात्मक कार्यवाईयों को रोकने के लिये अंहिसा का दर्शन दिया, इंसानियत को बचाने के लिये अंहिसावादियों की एक सेना खड़ी करने का आह्वान किया तो उनके निकटतम रहने वाले सब जाटों ने बुद्ध धर्म में प्रवेश किया। अरब देशों में इन पाखडी लोगों ने जब अंधविश्वास, मूर्ति पूजा और कुरीतियों को समाज में चर्मसीमा तक पंहुचा दिया तो उनके विरूद्ध सुधार आंदोलन के रूप में पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने जिहाद का नारा देकर एक फौज का गठन किया तो मुहम्मद साहब के साथ वहां के सब जाट हो गए। और समाज में अधर्म ने जडें जमा ली तो गुरू नानकदेव ने धर्म की वीणा बजाई तथा समाज में सुधार की गुहार की तो पंजाब के सब जाट सिख हो गए।

राजस्थान में स्थाई अकाल के कारण भुखमरी फैल गई और पशु–पक्षियों को मार–मार कर खाने लगे, एक प्रकार से हिंसा का तांडव जाग उठा तो उस समय गुरू जम्भेश्वर महाराज ने अंहिसात्मक उसूलों को अपनाने, अनपढ़ता के विरूद्ध समाज में चेतना एवं सुधार भावना को ललकारा दिया तो वहां के जाट विश्नोई हो गए। चारों वेद, छह शास्त्र तथा गीता के गहन अध्ययन के बाद महर्षि दयानन्द ने जब यह देखा कि देश और समाज को ढ़ोंगी और पाखंडियों ने अपनी जकड़न में लेकर भारी अंधविश्वास फैलाया हुआ है जबकि वेद शास्त्रों में इस प्रकार की मूर्ति पूजा और पोपलीला का कोई जिक्र नहीं है तथा कुछ विधर्मी अपनी पेट पूजा एवं आजीविका चलाने के लिए ज्योतिष–पोथी पत्रों के नाम पर भोली–भाली जनता को ठग रहे हैं तब उन्होंने देश में जागृति लाने तथा समाज सुधार के लिये विशुद्ध आर्य धर्म के प्रचार का डंका बजाया तो देश का जाट आर्य समाजी हो गया। हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के आगमन पर ईसाई मिशनरियों ने हजरत ईसामशीह के आर्देशों, उनकी कुर्बानियों और समाज में उनकी सुधार भावना का खुलकर प्रचार किया तो उनके प्रचार से प्रभावित होकर देश का बचा–कुचा जाट ईसाई हो गया। अब जाट बौद्ध भी है, मुसलमान भी, सिख भी, बिश्नोई भी, आर्य समाजी भी और ईसाई भी। ये सब मजहब या धर्म नहीं हैं, ये समाज सुधार की दिशा में तहरीकें हैं, शाश्वत आन्दोलन मानकर, इनमें शामिल हुआ। इन आन्दोलनों के शुरूआती दौर में, जाट इन्हें आन्दोलन मानकर इनमें शामिल हुआ। लेकिन गैर–जाट या दूसरी जातियों के लोग इनमें उस समय शामिल हुए जब ये आन्दोलन धर्म और मजहब के रूप में बदल गए। उस समय कोई सरकारी आंतक से आतंकित होकर, कोई अर्थिक अभाव में और कोई अन्य प्रलोभनों द्वारा इनमें शामिल हुआ। जाट सुधारवाद जाट के खून से लिखा हुआ उसका एक सिद्धान्त है। जाट हर सुधारवादी आन्दोलन का आगु रहा है, हर सुधारवादी आन्दोलन में शामिल होकर जाट ने उसे आन्दोलित किया है। समाज में उठी हर सुधारवादी लहर पर सवार होकर, जाट अंधविश्वास, अन्याय एवं झूठ के दरिया को पार करता है। बाद में इन आन्दोलनों से धर्म और मजहब का रूप देकर उन्हें जुनूनी और कट्टरता में बदल कर विकृत कर दिया। परन्तु जाट जहां भी है पवित्र है, जुनूनी नहीं है, जाट ने सदा अपनी पवित्रता को निस्वार्थ बना कर रखा है। इस देश के हिन्दुओं को छोड़कर बाकी जिस किसी भी धर्म मजहब में जाट हैं वहां जाट को अलग से जाति या बिरादरी नहीं माना जाता, उन सब धर्मों–महजबों ने जाट को अपने में समाहित कर रखा है परन्तु यहां पर तो जाट–गैर जाट कहकर, जाट को अलग से चिन्हित किया हुआ है। लेकिन जाट जहां भी है, उसकी संस्कृति नहीं बदली, उसकी प्रवृत्ति नहीं बदली, उसकी नस्ल नहीं बदली, उसने कहीं भी और कभी भी अपने नैतिक चरित्र की पहचान नहीं बदली। जाट का विश्वास है:

हमने माना कि मजहब जान है इंसान की,
कुछ इसके दम से बाकि शान है इंसान की,
रंगे कौमियत (राष्ट्रीयता) मगर इससे बदल सकता नहीं
खूने आबाई (बाप दादा का खून) रगे तन से निकल सकता नहीं।

जाट जहां भी है उसे ईश्वर की सत्यता में अटूट विश्वास है। वह जहां कहीं भी है ढोंग और पाखण्ड से कोसों दूर है, वह कहीं भी मूर्तिपूजक नहीं है। वह ईश्वर की सीधी और सच्ची उपासना में विश्वास रखता है। और अनेक धर्मों–मजहबों में अपनी आस्था रखकर, उन्हें आदर देना, सब इंसानों को बराबर समझना, सब मनुष्यों को परमात्मा के बन्दे मानना, सबसे प्यार करना, जाट के समकक्ष या इससे बढ़कर इस धरती पर कोई और धर्मनिरपेक्ष नहीं है। जाट ही धर्मनिरपेक्षता का सही स्वरूप है, जिसे इस विषय में कोई चुनौती नहीं दे सकता। जाट सब धर्मों को मानव धर्म मानता है जो सब ईश्वर की आस्तिकता के प्रतिक हैं। जाट रूढ़िवादी, कट्टरवादी या अवसरवादी न होकर मानवता का अलम्बरदार है। जाट कवि की इस उक्ति में विश्वास रखता है:

संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। –'प्रेमचन्द'

'यही है इबादत, यही दीन व ईमां,
कि दुनियां में काम आये इंसां के इंसां।'
धर्म निरपेक्षता बनाम साम्प्रदायिकता धर्मांधता एवं धर्मसापेक्षता

हजरत मुहम्मद ने अपने गोत्र कुरान के नाम पर अपनी महान कृति कुरान शरीफ की रचना की। कुरान गोत्र भी जाटों के अढ़ाई हजार गोत्रों में से एक है। मुहम्मद साहब जहां पैदा हुए थे वह क्षेत्र पूरी तरह रेगिस्तान था। अकालग्रस्त होने के कारण अन्न और पानी का अभाव था। कुरान में बहुत सारी बातें वहां के देशकाल के आधार पर भी वर्णित हैं, जिस कारण मुहम्मद साहब ने यह भी स्पष्ट किया कि कुरान–सरीफ में जो कुछ भी बयान किया गया है उसे अन्तिम वाक्य न समझकर परिस्थिति एवं समयानुसार या संसार में बदलती हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखकर उसे अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। जैसे सभी मुसलमान सुन्नत को न अपना कर शिया भी हो सकते हैं और अधिकांश जाट शिया हैं, दूसरे अन्न के अभाव में मांस खाया जा सकता है अन्यथा मांस खाना आवश्यक नहीं। कुरान में एक शब्द है तोहिमम यानी किसी वस्तु के अभाव में अन्य वस्तु का प्रयोग में लाना। जैसे नमाज के लिये खानदान का निकटता या दूरी की भी कोई खास शर्तें लागू नहीं हैं। उनके कोई भी आदर्श कट्टरता पर निर्भर नहीं हैं और न ही इस्लाम में किसी प्रकार का जुनून पाया जाता है। परन्तु बहुत सारी बातें बाद के कठमुल्लों ने अपने अनुसार ढाल कर इस्लाम को कट्टर और जुनून से ओत–प्रोत करने की कुचेष्ठा की है। इस्लाम ने ईश्वर की उपासना के लिये जो आदर्श स्थापित किये हैं उनमें परमेश्वर की निगुर्ण भक्ति पर जोर देकर मुर्ति पूजा का पूरी तरह खंडन किया है। जाट ने इस्लाम को सुधार भावना तथा सुधारों को समाज में प्रस्थापित करवाने के लिए एक अन्दोलन के रूप में स्वीकार किया था। इस्लाम जाट के लिए कोई बन्धन नहीं है। जाट ने मुस्लमान होकर भी उन कट्टरपंथियों की किसी जड़ता को स्वीकार नहीं किया जो उनके दैनिक कर्म में बाधक हों।

हजरत मुहम्मद के अनुसार इस्लाम कोई धर्म मजहब न होकर उन कुरीतियों के खिलाफ बगावत है, जिहाद, आन्दोलन है जो बेमतलब में किसी भी कर्मयोगी मुनुष्य को बाधित करती हो। इसी प्रकार गुरू नानक के अनुसार गुरू का सच्चा शिष्य (सिख) वही है जो सामाजिक कुरीतियों एवं जड़ता के विरूद्ध आन्दोलनरत रहे। जाट के लिये आन्दोलन और जिहाद जैसे शब्द पूरी तरह प्रिय हैं। क्योंकि जाट तो पैदा ही संघर्ष के लिये हुआ है। मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारों, चर्च आदि धर्मस्थलों की संस्कृति से जाट अधिक प्रभावित नहीं है। वह तो प्रत्येक धर्म की खामख्वाह की जकड़न और जड़ता से आजाद है। जाट का मानना है कि यदि वह धर्मस्थलों में बैठकर उन धार्मिक कार्यकलापों में फंसा रहा तो अपना खेती–बाड़ी का काम तो कर ही नहीं सकता इसलिये जाट कभी भी और कहीं भी किसी मन्दिर का पुजारी नहीं हैं, किसी मस्जिद का मुल्ला व ईमाम नहीं है, किसी गुरूद्वारे का ग्रन्थी नहीं है, किसी मठ का मठाधीश नहीं हैं, किसी चर्च का पादरी नहीं है। इन धर्मस्थलों को भीख हिन्दु मन्दिरों की तरह, इन धर्मों के पाखंडी लोगों ने सम्भाल रखा है। जाट के अतिरिक्त जिन पाखंडी हिन्दुओं ने इस्लाम कुबूल किया अन्य धर्म–मजहबों में ये गए वहां जाकर भी इन्होंने पाखंड ही फैलाया। शेख–सईद बने, ग्रन्थी बने, पादरी बने और वहां भी पाखंड फैलाने की कुचेष्टा की। जाट इन तथाकथित सब धर्मों को आन्दोलन के रूप में तो स्वीकार करता है, इनके कठोर, कट्टर पंथी एवं जुनूनी नियमों की पाबंदियां स्वीकार नहीं करता। न जाट कट्टर है, न जुनूनी है वह तो सीधा–सादा किसान है। जाट ईश्वर की इस सत्यता को तो कुबूल करता है कि यह प्रकृति, यह संसार, यह ईश्वर की प्रभुसत्ता परिवर्तनशील है। जो आज पैदा हुआ है उसकी मृत्यु अनिवार्य है, यह प्रकृति स्थिर नहीं बदलाव की मोहताज है, बदलाव लाना और बदलना ईश्वर का नियम है और ईश्वर के इसी नियमानुसार जाट भी इस प्रतिदिन के परिवर्तन को अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल करते हुए कार्यरत है। जाट यह अनुभव करते हुए उसकी सत्ता का सत्यता इस धरती पर स्थापित करने के लिये दिन–रात घोर परिश्रम करता है तो फिर इन खामखाह के धर्मस्थलों में बैठकर क्यों समय बर्बाद किया जाए? वह झूठ के विरूद्ध लड़ता है, अन्याय के विरूद्ध लड़ता है, बेईमानी के विरूद्ध लड़ता है प्रत्येक प्रकार की अनैतिकता के विरूद्ध लड़ता है और उन अधर्मियों के विरूद्ध लड़ता है जो साक्षात ईश्वर की सत्ता को न मानकर पत्थरों में भगवान को खोजते हैं। जाट का प्रत्येक आचरण सच्चाई से ओत–प्रोत है वह अपने जीवन में प्रत्येक वह कार्य करता है जिसके करने में किसी भय का आभास न हो, जिसके करने में लज्जा और किसी प्रकार की शंका की अनुभूति न हो। वह अपने प्रत्येक कार्य में जिम्मेदार है, कर्तव्य पालक है, देशभक्त है। भारत की सीमाओं पर पहरा देने वाला जाट यह जानता है कि सीमापार पाकिस्तान की सीमा का पहरा देने वाला भी जाट है परन्तु देशभक्ति और वतनप्रस्ती को अधिमान देते हुए वह भाई के खून की परवाह किये बिना, देश की सुरक्षा के नाम पर, सीमापार के भाईयों को गोलियों से भून देता है। इसी प्रकार पाकिस्तान की सीमा पर पहरा देने वाला जाट, अपनी देशभक्ति के सदके देश की सुरक्षा के नाम पर भारतीय जाट भाईयों को भून डालता है। सन् 1943–44 में भारत की पूर्वी सीमा पर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज, अंग्रेज की भारतीय सेना के साथ जूझ रही थी, आजाद हिन्द फौज के हवाई जहाज पोस्टरों की वर्षा कर रहे थे जिनमें लिखा होता था कि हम तुम्हारे भाई हैं और देश की आजादी के लिये लड़ रहे हैं तुम हथियार डालकर हमारे साथ मिल जाओ। परन्तु भारतीय सेना बहादुर जाटों का यह संकल्प था कि हम अंग्रेज से सीमाओं की रक्षा करने के नाम पर वेतन लेते हैं, हमने सीमाओं की रक्षार्थ वफादारी की शपथ ली है, हम अपनी वफादारी को भाई के प्यार पर कुर्बान नहीं कर सकते। अतः जाट की देशभक्ति बिकाऊ नहीं है और न ही भाई के खूनी प्यार के प्रलोभन से फिसलने वाली है।

धर्मनिरपेक्षता क्या है? धर्मनिरपेक्षता मनुष्य के जीवन के उस आचरण का नाम है जो किसी भी प्रकार के प्रलोभन तथा जाति, समुदाय, समूह, बिरादरी, भाईचारे, कुनबे, कबीले, धर्म–मजहब की परवाह किये बिना सत्य और न्यायप्रिय नियमों का पालन करे। अपने जीवन में उन सामाजिक मूल्यों की पासबानी करे जो ईश्वरीय नियमों के अनुकूल हो, अनुसार हो।

साम्प्रदायिकता क्या है? साम्प्रदायिकता मनुष्य की उस कमजोरी का नाम है जो अपनी जाति, समुदाय समूह, बिरादरी, भाईचारे, कुनबे, कबीले, धर्म–मजहब के बचाव के नाम पर अन्यों के अधिकारों, जीवन मूल्यों, सत्य एवं सनातन आदर्शों पर डाका डाले, उन्हें छिन्न–भिन्न करे, नष्ट करे।

केवल कर्महीन ऐसे है जो भाग्य को कोसते है और जिनके पास शिकायतों का बाहुल्य है। – जवाहरलाल नेहरू

धर्माधंता एवं धर्मसापेक्षता क्या है? यह वह जीवन पद्धति है जो ढोंग, पांखड, आड़म्बर, ठगी, पोपलीला, हेरा–फेरी और लूट–खसोट से ओत–प्रोत हो। सन् 1992 में विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और संघ में बनी बाबरी मस्जिद को ढाह दिया। क्यों? क्योंकि उनके अनुसार बादशाह बाबर के शासन काल से पहले वहां राम का मन्दिर था जिसे बाबर ने ढाह कर उसके स्थान पर मस्जिद बनवा दी थी। जब उनसे जाना गया कि अब आप क्या करोगे? उनका उत्तर था कि वे उस स्थान पर राम मन्दिर बनवायेंगे। राम सूर्यवंशी क्षेत्रीय राजा था और बाबर सूर्यवंशी मुसलमान बादशाह था। राम बाबर एक वंश के राजा और बादशाह थे, मन्दिर भी सूर्यवंशियों का था और फिर मस्जिद भी सूर्य वंश की थी और उसे ढहाने वाले हिन्दू थे। मस्जिद और मन्दिर तो सूर्यवंशियों की इच्छानुसार ही बनने और बिगड़ने चाहिये थे, ये हिन्दू कौन हैं? और ये मन्दिर क्यों बनाना चाहते हैं? मन्दिर इसलिये बनवाना चाहते हैं ताकि उस मन्दिर में देवी–देवताओं की मूर्तियां रखी जाएं, अंधविश्वासी और धर्माध लोग उन मूर्तियों पर चढ़ावा चढ़ायें और उस चढ़ावे पर इनके पुजारी अपना जीवन यापन करें, उनकी आजीविका चले, उनकी बेरोजगारी दूर हो, उनके परिवार वाले, उनके वंश के लोग, भारतीय जनता पार्टी को वोट दें और उनकी सरकार बने तथा फिर इस देश में ढोंग, पांखड, ठगी पोपलीला, लूटमार और हेराफेरी का बोलबाला हो और मुस्टंडे मौज करें। वे कौन लोग हैं? वे हिन्दूधर्मी हैं और हिन्दू संस्कृति के पुजारी हैं। इन हिन्दू धर्मियों ने इस देश में लाखों करोड़ों मन्दिर, शिवालय बनवा रखे हैं और उनमें देवी–देवताओं की मूर्तियां रखी हुई हैं जिन पर अन्धविश्वासी लोग चढ़ावा चढ़ाते हैं और उन मन्दिरों के पुजारी, पुरोहित, पंडे, उस चढ़ावे को खाते हैं और मौज करते है। उन मन्दिरों में हिन्दू व्यापारी लोग प्रतिदिन प्रातः सांय उन मूर्तियों के सामने सिर झुका कर मिन्नतें और मुरादें मांगते हैं, उनकी अराधना करते हैं और उनका आशिर्वाद पाकर दिन में, अपने हाट–बाजार में, सारा दिन झूठ बोलते हैं, बेईमानी करते हैं, हेरा–फेरी करते हैं, खाद्यान्नों में मिलावट करते हैं, ये सब उनका नित्य कार्यक्रम है जिसे उन्होंने हजारों साल से चलाया हुआ है। उस कार्यक्रम का नाम है हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति। उस हिन्दू धर्म और संस्कृति के नाम पर करोड़ों–करोड़ साधु–संतों के वेश में तिलक धारी त्रिशुल लिये घूमते हैं, वे सब दक्षिणा प्राप्त करते हैं, दूसरों की कमाई खाते हैं, और दिन रात अंधविश्वास का प्रचार करते हैं ताकि यह हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति बची रहे और ये इसी प्रकार मौज करते रहें।

जाट इन लोगों से पूछता है, ओ मन्दिरों का चढ़ावा खाने वाले भद्र पुरूषो! कभी काम करके भी खालो, तुम्हारी पीढ़ियां दर पीढ़ियां बीत गई हराम का माल खाते हुए कुछ तो सोचो! तुम हजारों साल से समाज को खाये जा रहे हो, समाज को कुछ देना भी सीखो! समाज को चूसते–चूसते, समाज को खाते–खाते, युग बीत गए, अब कुछ देकर भी दिखा दो! अब तक समाज को दी हुई तुम अपनी कोई देन बताओ! जब तुम्हारी समाज की कोई देन ही नहीं है तो तुम उस दाता भागवान को क्या जवाब दोगे? अब तो विज्ञान का युग है, दुनिया चाँद पर पंहुच चुकी है तुम अब भी पत्थरों में भगवान ढूंढते हो। पुर्नविवाह न करने के कारण तुम्हारी जवान विधवा बेटियां वेश्या बनती हैं, क्लबों में नाचती हैं, उनकी जवानी पर रहम करो! तुम अपने आप को समाज का उच्च वर्ग मानते हो तुम्हें कर्म भी तो उच्च करने चाहियें। तुम सच्ची राह दिखाने वाले जाट को कोसते हो, उसे घेरने और उसकी सच्ची राह रोकने के लिये अनेकों जाल बुनते हो, उसे मिटाने के लिये सौ–सौ तरीके सोचते हो परन्तु तुम यह क्यों नहीं जानते कि जिसको राखे साइयां उसे मार सके ना कोए। जाट का खुरदरापन तुम्हें अखरता है लेकिन यह अनुभव क्यों नहीं करते कि सच्चाई हमेशा कड़वी होती है और उसका परिणाम मीठा होता है। जाट बाहर से बेशक खुरदरा हो परन्तु भीतर से अति मूलायम है। वह तुम्हें सच्ची बात रास नहीं आती। तुम मानते हो कि तुम्हारे गलत काम करने के रास्ते में जाट सब से बड़ी रूकावट है, सबसे बड़ा रोड़ा तुम्हें रोकने और टोकने वाला कोई नहीं है। इसलिये तुम जाट के दुश्मन बने बैठे हो। तुम यह क्यों मानते हो कि जाट सच्ची बात सिर्फ तुम्ही से क्यों कहता है। जाट तो अपनी सच्ची और दो टूक बात अन्य बिरादरियों के लोगों को भी कहता है। जाट तो तुम्हारे साथ ही व्यापारियों को भी यही उपदेश देता है कि वे भी नास्तिकता छोड़ दें और भगवान की सत्ता से डर कर चोर बाजारी न करें, गरीबों का शोषण न करें, अनैतिक तरीकों से धन उपार्जित न करें लेकिन वे भी आप की तरह हठी हैं और अपनी आदत से मजबूर हैं।

जाट तो हरिजन और पिछड़ी जाति के लोगों से भी कहता है कि जो तुमने अपना पिछड़ापन दूर करने के लिये, सरकार से 25 प्रतिशत आरक्षण लेकर अन्य जातियों के अधिकारों का हनन किया है या कर रहे हो वह ठीक नहीं है क्योंकि कहीं भी और कभी भी पूरी की पूरी कोई जाति न गरीब होती है न ही अमीर होती। व्यक्ति गरीब होते हैं और व्यक्ति ही अमीर होते हैं। पूरी की पूरी जातियां न गरीब होती है और न अमीर होती हैं। जाट उन्हें भी कहता है कि सरकार ने तुम्हें जो यह रियायत दी है इस रियायत की राशि सरकार की जेब से न निकाल कर गैर आरक्षित जातियों की जेबों पर डाका डाला जा रहा है। सरकार अपनी वोटों की खातिर ये जो राजनीतिक द्रोह कर रही है, जो पाप कर रही है तुम उस पाप की घूट पीकर, अपनी गरीबी दूर करने की बात कह कर, ये अनैतिक रियासत प्राप्त कर रहे हो, यह केवल पाप ही नहीं सामाजिक अपराध भी है क्योंकि पिछले 67 वर्षों से दलित जातियां जो यह आरक्षण रूपी रियासत प्राप्त कर रही हैं उसे प्राप्त करके बहुत सारे लोग, ए श्रेणी की नौकरियां हासिल कर अमीर हो चुके हैं, कार, कोठी और बंगलों में रह रहे हैं।

जाट का कहना है कि आरक्षण की सुविधा जरूरत मन्द दलितों को देनी चाहिये या सरकार उन्हें गैर आरक्षित घोषित करे और वह रियायत उन मजदूरों को दी जाये जो प्रतिदिन की दिहाड़ी पर अपना गुजर बसर करते हैं या उन्हें दी जाये जो घुमन्तु कबीले हैं जिनका आजादी के 67 वर्ष बाद भी कोई ठौर ठिकाना नहीं। लेकिन जाट का यह कथन उन हरिजन और पिछड़ी जाति के लोगों को व्यापारी और पोपों की तरह नागवार गुजरता है तथा स्पष्ट साफ और सच्ची बात कहने पर वे भी जाट को अपना विरोधी मानकर उन्हीं की हां में हां मिलाते हैं इस प्रकार उन्हें तो मुफ्त में ही, हरिजन और पिछड़ी जाति के लोगों के रूप में, जाट के विरूद्ध अपने हिमायती प्राप्त हो जाते हैं। जिस कारण वे सब जाट को अकेला मानकर जाट और गैर जाट का नारा लगा कर इकट्ठे हो जाते हैं परन्तु जाट उन सब से भी नहीं डरता और कहता है कि ये सब पापी हैं, अनैतिक हैं, इन सब का पाप इन्हें इकट्ठा किये हुए है। जिस प्रकार पचास गधे मिलकर भी एक घोड़ा नहीं हो सकते उसी प्रकार से पचासों पापी, अपने अनैतिक दुष्कर्मों के कारण भयभीत हैं, डरे हुए हैं तथा डर कर

संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। –'प्रेमचन्द'

इकट्ठें बैंठे हैं ये मलीन आत्मा के लोग एक आत्मबली जाट को नहीं जीत सकते, उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते, सैंकड़ों भेड़–बकरियों की एकता उस शेर के सम्मुख नहीं आ सकती जिसके पीछे उसके परोपकार की शक्ति छिपी हुई है। जिसका नाम परमेश्वर है क्योंकि 'मदुई लाख बुरा चाहे क्या होता है, वही होता है जो मंजूरे खुदा होता है, जाट ईश्वर की सत्ता को सत्य मानता है। वे पत्थरों की सत्ता को सत्य मानते हैं। पाखंडियों का भगवान मन्दिरों में वास करता है, जाट का भगवान खेत और खलिहान में रहता है। वे अकर्मण्ता और मुफ्त खोरी में विश्वास रखते हैं, जाट अपने कर्मयोग का पुजारी है। उनकी नियत लेने–देने, ठगने और लूटने खाने तक सीमित है, जाट कमाने और कमाकर दान देने तथा दाता बना रहने में विश्वास करता है। जब वे अपनी 'खू' न छोड़ेंगे तो फिर जाट अपनी वफादारी क्यों छोड़े ? उन्होंने झूठ का दामन पकड़ कर नास्तिकता को परवान चढ़ाया है, जाट सच्चाई का पल्लू थाम कर ईश्वर का नाम लेकर आगे बढ़ रहा है, झूठ और सत्या के बीच लड़ाई का यह खेल चल रहा है। सत्य झूठ को सौ बार हराकर कहता है :–

बातिल से दबने वाले ऐ आसमां नहीं हम,
सौ बार कर चुका है तू इम्तिहां हमारा।

हजारों साल से झूठ, सत्य को मिटाने में लगी हुई है परन्तु सत्य को मिटाया नहीं जा सकता है। यही बात है कि सत्यावादी जाट की हस्ती मिटाये से भी नहीं मिट रही। डा॰ इकबाल कहते हैं:

कुछ बात है कि हसती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।

यूनान मिश्र रोम सब मिट गए जहां से,
अब तक मगर है बाकी नामो निशां हमारा।

डा॰ इकबाल का कहना है कि जाट की सच्चाई के कारण उसके बेटों की नजरें आसमान की और उठी रहती हैं, उनकी गर्दन कभी नहीं झुकती।

उकाबी रूह जब बेदार होती है जवानों में,
नजर आती हैं मंजिलें उनको आसमानों में।

गुलामी में काम आती है तदबीरें व शमशीरें
गर हो यकीं कामिल तो कट जाती हैं जंजीरें।
कोई अंदाजा कर सकता है भला उसके जोरे–बाजू का,
निगाहें मर्द मोमिन से बदल जाती हैं तकदीरें।

डा॰ इकबाल ने जाट को मर्द मोमिन कहा है यानी आस्तिक मर्द। और बताया कि जब वे अपनी उकाब जैसी नजरों को आसमान पर गाड़ देते हैं यानी आत्मविश्वास में भरकर अपनी मंजिल को निहारते हैं तो उनकी तकदीरें भी बदल जाती हैं। उनके बाजूओं के दम–खम का कोई अनुमान नहीं लगा सकता। जाट को मिटाने वाले स्वयं मिट गए। यदि वह अब तक जिन्दा है तो उसकी जिन्दगी का राज, उसकी सच्चाई, उसका परिश्रम, उसकी दानशीलता, अपने नेक कर्मों में सच्ची लगन और ईश्वर की सत्ता की सत्यता में प्रगाढ़ आस्था में छिपा हुआ है।

फानूस बनकर जिसकी हिफाजत हवा करे,
उस शमा को कौन बुझा सके जिसे रोशन खुदा करे।

जाट समाज के खाप संगठन

jkds'k lkgk

जाट जाति एक आदिकालीन जाति है जिसमें अनेक विशेषताऐं हैं। जिसके कारण विश्व में जाटों की एक अलग पहचान है। जाट समाज प्राचीन काल से ही प्रजातान्त्रिक संघीय शासन व्यवस्था का समर्थक रहा है तथा इस समाज की खाप/पाल व्यवस्था इस बात का उदाहरण है। जाटों की खाप (पाल) व्यवस्था सामाजिक विवादों को पंचायतों के माध्यम से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती आयी है तथा वर्तमान समय में भी जाट समाज के खाप/पाल संगठन सामाजिक बुराइयों के खिलाफ प्रभावी रूप से कार्य कर रही है। हरियाणा तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाटों के सामाजिक जीवन कार्यों में खाप (पाल) संगठनों का बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव है। विशेष रूप से समगांव व समगोत्र विवाह में खाप संगठन बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिसके कारण कई बार इन खाप संगठनों को आलोचना का भी शिकार होना पड़ता हैं तथा इन्हें रूढ़िवादी विचारों के संगठनों के रूप में भी मीडिया द्वारा प्रचारित किया जाता है परन्तु वास्तव में यदि जाट समाज में खाप (पाल) संगठनों की भूमिका ना हो तो इस समाज के नैतिक पतन होने में अधिक समय नहीं लगेगा। वर्तमान समय में खाप संगठन जहां सामाजिक कुरीतियों पर सामाजिक स्तर पर प्रतिबन्ध लगाकर जाट समाज को जागृत करने में प्रभावशाली रूप से कार्य कर रहे हैं वहीं जाटों के नैतिक आचारण को बचाने के लिए समगोत्र व समगांव विवाह का प्रभावशाली ढंग से विरोध कर रहे हैं। जोकि खाप पंचायतों का एक प्रंशसनीय तथा लोकहित का कार्य है। जिसकी जितनी प्रंशसा की जाय कम है। वर्तमान समय में जाट समाज को केंद्रीय सेवाओं में आरक्षण दिलाने में सबसे महत्वपूर्ण आन्दोलन व योगदान जाटों के खाप संगठन ही दे रहे हैं। जाटों के खाप संगठनों पर प्रतिबन्ध लगाने वाले जाट विरोधी नेताओं के राजनीतिक दलों को भी वोटों के लिए जाटों के खाप संगठन सामाजिक संगठन लगने लगे हैं तथा चुनावी मौसम में वे राजनेता भी जाटों की खाप (पाल) संगठनों की प्रंशसा कर रहे हैं। जाट समाज की खाप (पाल) व्यवस्था को अधिक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए अच्छा रहेगा कि इन खाप संगठनों में समाज के पंचायती चौधरियों के साथ–साथ जाट समाज के बुद्धिजीवियों को भी शामिल किया जाये ताकि खाप संगठन कानून के दायरे में रहकर सामाजिक विवादों का निपटान करवा सकें। वर्तमान समय में जाट समाज के खाप (पाल) संगठन हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान के कुछ जाट बाहुल्य क्षेत्रों में प्रभावशाली हैं। जाटों के कुछ प्रमुख खाप (पाल) संगठन निम्न प्रकार से हैं :–

cfuoky [kki % इस खाप के कार्य क्षेत्र राजस्थान, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश के गांवों में है। tk[kM+ [kki % इस खाप के कार्य क्षेत्र में रोहतक, सिरसा, (हरियाणा),

बहुत अधिकार मिल जाने पर मनुष्य का विचार दुषित हो जाता है। –'रिलियम पिर चौथम'

बीकानेर, हनुमानगढ़, सीकर (राजस्थान) तथा पंजाब के कुछ गांव आते हैं । **ifu;k [kki** ½ इस खाप में वाडमेर, चुरू, श्री गंगानगर (राजस्थान), भिवानी (हरियाणा), अलीगढ़, मेरठ, (उत्तरप्रदेश), तथा जालन्धर (पंजाब) के बहुत से गांव आते हैं। **jkor iky** ½ यह खाप अलीगढ़, आगरा तथा पलवल जनपदों के गांव में सक्रिय है। **rkej iky** ½ इस खाप में गाजियाबाद, बागपत, मुरादाबाद, अलीगढ़ तथा बिजनौर जनपदों के गांव आते हैं। **vgykor [kki** ½ इस खाप में रोहतक, मेरठ, मुज्जफर नगर तथा राजस्थान के कुछ गांव आते हैं। **ugjk [kki** ½ इस खाप के गांव दिल्ली, मेरठ व राजस्थान के कुछ क्षेत्र में है। **r{kd [kki** ½ इस खाप में सोनीपत, दिल्ली तथा बीकानेर जनपदों में हैं। **d.M [kki** ½ इस खाप में सोनीपत, पानीपत, जीन्द, बिजनौर व रोहतक जनपदों के कुछ गांव आते हैं। **';kdUn@'kkfdu [kki** ½ इस खाप के गांव दिल्ली, जीन्द पटियाला तथा बिजनौर जनपदों में है। **flgkx [kki** ½ इस खाप के गांव अजमेर, बीकानेर, सिरसा, हिसार तथा मुज्जफरनगर जनपदों में हैं। **QkxkV [kki** ½ इस खाप के गांव भिवानी, हिसार तथा बुलन्दशहर जनपदों में है तथा कुछ गांव राजस्थान में भी हैं। **gMMk [kki** ½ इस खाप के गांव रोहतक, जालन्धर, अमृतसर व एक गांव दयालपुर फरीदाबाद जनपदों में हैं तथा कुछ 36 गांव राजस्थान में भी हैं। **[kk[kj [kki** ½ इस खाप के गांव मथुरा, अलीगढ़, बागपत, मेरठ आदि जनपदों में हैं। **lkydh [kki** ½ इस खाप के कार्य क्षेत्र में आगरा, मेरठ तथा मथुरा जनपदों के कुछ गांव आते हैं। **gxk [kki** ½ यह खाप मथुरा जनपद के गांव में सक्रिय है। **nfg;k [kki** ½ इस खाप में सोनीपत, रोहतक तथा भिवानी जनपदों के करीब 40 गांव आते हैं। **';kjk.k [kki** ½ इस खाप में भिवानी, हिसार तथा जीन्द जनपदों के कईं गांव आते है। **lkxoku [kki** ½ इस खाप में हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश के कईं जनपदों के गांव आते हैं। **ljkgk [kki** ½ इस खाप के अन्तर्गत सोनीपत जनपद के 6 गांव रोहतक जनपद के 2 गांव फरीदाबाद जनपद का दयालपुर गांव बागपत जनपद के 2 गांव, मुज्जफरनगर जनपद के 2 गांव तथा पंजाब के लुधियाना के कुछ गांव आते हैं। **tkV [kki** ½ इस खाप में हिसार जनपद के कई गांव आते हैं। **uku [kki** ½ इस खाप में जीन्द, हिसार, फतेहाबाद के कुछ गांव तथा बीकानेर व उत्तरप्रदेश के कुछ जनपदों के गांव आते हैं। **fluflokj [kki** ½ इस खाप में भरतपुर व आस–पास के जनपदों के बहुत से गांव आते हैं। **[kVy [kki** ½ इस खाप में मथुरा, आगरा व भरतपुर जनपदों के बहुत से गांव आते हैं। **Mkxj [kki** ½ इस खाप में भरतपुर, अलीगढ़ तथा फरीदाबाद जनपदों के कुछ गांव आते हैं। **xknkjk [kki** ½ इस खाप के गांव उत्तरप्रदेश, राजस्थान व हरियाणा के राज्यों के कईं जनपदों में हैं। **lkj.k@lgkj.k [kki** ½ इस खाप के गांव उत्तरप्रदेश, राजस्थान तथा हरियाणा के कईं जनपदों में हैं। **lkxfj;k [kki** ½ इस खाप के गांव भरतपुर, मथुरा तथा आगरा जनपदों में हैं। **pkgj [kki** ½ यह खाप मुख्य रूप से आगरा में प्रभावी है तथा इसके कईं गांव मथुरा तथा भरतपुर जनपदों में भी हैं। **ukgokj [kki** ½ इस खाप से सम्बधित मुख्य गांव आगरा तथा मथुरा जनपदों में हैं। **Buvk [kki** ½ इस खाप में मुख्य रूप से मथुरा तथा अलीगढ़ जनपदों के गांव हैं। **ipgj [kki** ½ इस खाप में मथुरा, अलीगढ़ तथा आगरा के कईं गांव शामिल हैं। **xgykr@xgykor** ½ इस खाप में दिल्ली, हरियाणा तथा उत्तरप्रदेश कुछ जनपदों के गांव शामिल हैं। **lgjkor [kki** ½ इस खाप में दिल्ली के आसपास के जनपदों व राजस्थान के कुछ गांव शामिल है। **Bdj;yk [kki** ½ यह खाप मुख्य रूप से बृज क्षेत्र के गांव में प्रभावकारी है। **rofr;k [kki** ½ इस खाप के गांव फरीदाबाद, अलीगढ़, मथुरा तथा मेरठ जनपदों में है। **pkxkek [kki** ½ यह खाप मुख्य रूप से बागपत (उत्तरप्रदेश) के करीब 40 गांवों में प्रभावकारी है। **crhlk [kki** ½ यह खाप मुजफरनगर जनपद के करीब 30 गांवों में प्रभावशाली है। **pkgku [kki** ½ इस खाप में लाकडा गोत्रीय जाटों के दिल्ली तथा बागपत जनपदों के गांव आते है। **xBokyk@efyd [kki** ½ इस खाप में सोनीपत, पानीपत, हिसार मुज्जफरनगर तथा बागपत जनपदों के बहुत से गांव आते हैं। **cfy;k.kk [kki** ½ इस खाप का कार्यक्षेत्र, मुज्जफरपगर, सोनीपत, बुलन्दशहर, अलीगढ़ तथा हरियाण, राजस्थान में है। **egepkfclh [kki** ½ इस खाप में रोहतक जनपद के मेहम क्षेत्र के 24 गांव आते हे। जिनमें कईं गोत्रों के जाट शामिल है। **dky [kki** ½ इस खाप के गांव में गुरदासपुर (पंजाब) व मथुरा (उत्तरप्रदेश) जनपदों के 70 गांव आते हैं। **ikye 360 [kki** ½ इस खाप में दिल्ली व आसपास के जनपदों के 360 गांव शामिल है। **loiky [kki** ½ इस खाप में फरीदाबाद तथा मथुरा जनपदों के बहुत से गांव शामिल हैं। **ckoy pkjklh [kki** ½ इस खाप के गांव रेवाड़ी तथा महेन्द्रगढ़ जनपदों में हैं। **fldjokj iky** ½ इस खाप में मथुरा, अलीगढ़ तथा फिरोजाबाद जनपदों के 32 गांव शामिल हैं। **ljik [kki** ½ इस खाप में उत्तरप्रदेश के विभिन्न जाट गोत्रों के 80 गांव आते है। **tkV ckblh[kki** ½ यह खाप संगठन महाराष्ट्र के नासिक जिले की मालगांव तहसील के 22 गांवों में सक्रिय हैं तथा इस समय चौ॰ धन सिंह सहरावत इसके प्रधान हैं। **dkty [kki** ½ इस खाप में करनाल, हिसार, जीन्द जनपदों व उत्तरप्रदेश तथा दिल्ली के कुछ गांव आते हैं। **pgy [kki** ½ इस खाप में हरियाणा, उत्तरप्रदेश तथा पंजाब के कुछ गांव आते हैं। **vfry [kki** ½ इस खाप में मुख्य रूप से सोनीपत जनपद के कुछ गांव शामिल हैं। **eku [kki** ½ इस खाप में हरियाणा, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के कुछ गांव आते हैं।

इन खापों के अतिरिक्त जाट समाज में अन्य कईं गौत्रों के नाम से भी खाप संगठन सक्रिय हैं तथा भारत वर्ष में कईं स्थानों पर गांवों तथा क्षेत्र के नाम से भी जाटों के पंचायती संगठन समाज की समस्याओं को निवारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

बदलाव के दौर में शिक्षक की नई भूमिका

& jfo 'kdj

'शिक्षक दिवस' अध्यापक के लिए सबसे अहम दिन होता है। शिक्षक का समाज में सबसे बड़ा स्थान है। गुरू, शिक्षक, अचार्य, अध्यापक या टीचर ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को व्याख्यतित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है। इन्हीं शिक्षकों को मान–सम्मान, सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदर तथा धन्यवाद देने के लिए एक दिन निर्धारित है, जो 5 सितंबर को **'शिक्षक दिवस'** के रूप में जाना जाता है। असल में डॉ. राधाकृष्ण ने शिक्षकीय आदर्श को न सिर्फ भारत में अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित किया तथा न सिर्फ शिक्षकीय पद की गरिमा बढ़ायी, बल्कि वे उच्च पदों पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। वे शिक्षा को सामाजिक बुराइयों का अंत करने के लिए एक महत्वपूर्ण जरिया मानते थे। अपने ज्ञान को दूसरों में बांटने की अद्भूत प्रतिभा उनमें निहित थी तथा उसी उत्कृष्ट कला के कारण वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में विख्यात हुए। उनका मानना है कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।

वैश्विक शांति, समृद्धि एवं सौहार्द में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। प्राचीन काल से आज तक शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्ता का मानव जीवन में विशेष महत्व है। शिक्षकों द्वारा प्रांरभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर मानव समाज की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। गौरतलब है कि भारत में गुरू–शिष्य की प्राचीन समय से ही लंबी परंपरा रही है। गुरूओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में भी मिलता है। भारतीय संस्कृति में गुरू का ओहदा भगवान से भी ऊंचा माना गया है। प्राचीनकाल में राजकुमार भी गुरूकुल में ही जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे और विद्यार्जन के साथ–साथ गुरू की सेवा भी करते थे। राम–विश्वामित्र, श्रीकृष्ण–संदीपनी, अर्जुन–द्रोणाचार्य से लेकर चुद्रगुप्त मौर्य–चाणक्य एवं विवेकानंद–रामकृष्ण तक शिष्य गुरू की एक आदर्श एवं दीर्घ परम्परा रही है। श्री राम और लक्ष्मण ने महार्षि विश्वामित्र तो श्रीकृष्ण ने गुरू संदीपनी के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण की और उसी की बदौलत समाज को आततायियों से मुक्त कराया। गुरू के आश्रम से आरम्भ हुई कृष्ण–सुदामा की मित्रता उन मूल्यों की ही देन थी, जिसने उन्हें अमीरी–गरीबी की खाई मिटाकर एक ऐसे धरातल पर खड़ा किया, जिसकी नजीर आज भी दी जाती है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने तो अपने पुत्र की शिक्षिका को पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि उनके बेटे की शिक्षा में उनका पद आड़े नहीं आना चाहिये।

वस्तुतः शिक्षक उस प्रकाश–स्तम्भ की भांति है, जो न सिर्फ लोगों को शिक्षा देता है बल्कि समाज में चरित्र और मूल्यों की भी स्थापना करता है। कहते हैं बच्चे की प्रथम शिक्षक मां होती है, पर औपचारिक शिक्षा उसे शिक्षक के माध्यम से ही मिलती है। शिक्षा एकांकी नहीं होती बल्कि व्यापक आयामों को समेटे होती है। डा. राधाकृष्ण ने शिक्षा को एक मिशन माना था और उनके मत में शिक्षक होने के व्यवसायीकरण के विरोधी डा. राधाकृष्ण विद्यालयों को ज्ञान के शोध केंद्र, संस्कृति के तीर्थ एवं स्वतंत्रता के संवाहक मानते थे।

असल में शिक्षक शिक्षा और विद्यार्थी के बीच एक सेतु का कार्य करता है और यदि यह सेतु ही कमजोर रहा तो समाज को खोखला होने में देर नहीं लगेगी। वर्तमान हालात बहुत अच्छे नहीं हैं लेकिन आज भी इस पद को गरिमापूर्ण और सम्मानीय माना जाता है। ट्यूशन आदि के रूप में आज तमाम शिक्षक अपने ज्ञान की बोली लगाने लगे हैं। किंतु कुछ ऐसे गुरू भी हैं, जिन्होंने हमेशा समाज के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। ऐसे में जरूरत है गुरू और शिष्य दोनों ही इस पवित्र संबंध की मर्यादा की रक्षा के लिए आगे आयें ताकि इस सुदीर्घ परंपरा के संस्कारिक रूप को वह सम्मान मिलना चाहिये, जिसके वे हकदार हैं।

रिश्वत युग

बधाई हो। कलियुग समाप्त हो गया और रिश्वत युग आ गया है। सतयुग सबसे अच्छा था जिसमें सब खुश थे। त्रेता में थोड़ा बदलाव आया लेकिन तब भी धर्मधीरा था। द्वापर युग से इंसानियत में गिरावट आनी शुरू हो गई थी लेकिन तब भी जीत धर्म की हुई थी। इसके बाद कलियुग आया। कलियुग जैसा चल रहा था वह आपको पता ही है लेकिन अब तो लगता है कि कलियुग भी खत्म हो गया और रिश्वत युग शुरू हो गया। तभी एक ही दिन में एक अफसर, एक थानेदार और दलाल रिश्वत लेते पकड़े गए। वाह क्या बात है। प्रतिदिन रिश्वती पकड़े जा रहे हैं लेकिन फिर भी वे नहीं डर रहे हैं। क्यों डरें? अब तो साफ हो गया है कि अगर आप रिश्वत लेते पकड़े जाते हैं तो रिश्वत देकर छूट भी सकते हैं। और ज्यादातर छूट ही रहे हैं। रिश्वत का दूसरा नाम भ्रष्टाचार। सरकारी महकमों में आज कल तीन तरह की रिश्वत चल रही है। एक जायज रिश्वत, दूसरी नाजायज रिश्वत और तीसरी गला घोटू रिश्वत यानी एक रिश्वत जो आपका सरकारी टेंडरों की एवज में देनी ही देनी है। ठेकेदार पहले से ही अपने धंधे में इसका प्रोविजन लेकर चलता है। यह दस से पद्रंह प्रतिशत तक होती है। इसे व्यापारी या व्यवसायी यूं समझता है जैसे वो गायों को चारा डाल रहा है। इस रिश्वत को देने से उसका दिल नहीं दुखता। लेकिन यह न समझिए कि यह रिश्वत वह अपनी जेब से दे रहा है। नहीं, वह इस जायज रिश्वत को सरकारी खजाने से ही वसूलता है। दूसरी कहलाती है नाजायज रिश्वत। पंद्रह प्रतिशत से ज्यादा दी जाने वाली रिश्वत नाजायज है। यह देने के बाद व्यवसायी कहता है– अजी कुत्तों को टुकड़ा डाल दिया जिससे वे भौंके और काटे नहीं। और तीसरी है गला घोटू रिश्वत। इसमें रिश्वतखोर ठेकेदार की छाती पर सवार होकर उसका खून पीने लगता है और ठेकेदार भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में जाकर घंटी बजाता है। हम तो अपने नरेंद्र मोदी से यही कहना चाहते हैं– मोदी भाई, तुम बस एक काम कर दो। इस देश से रिश्वत खत्म कर दो। कसम से जब तक जियो तब तक प्रधानमंत्री बने रहना। कम से कम इस देश को रिश्वत युग से छूटकारा तो मिले लेकिन क्या यह उनके बस की बात है?

चरित्र पेड़ और प्रतिष्ठा उसकी छाया की तरह है। पेड़ वास्तविक आकार में रहता है, छाया जितनी बड़ी हम दिखाना चाहे। –'अब्राहम लिंकन'

एक शिष्य के आभूषण!

Mk- f'kokuh Hkkjrh

'जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह करतार' अर्थात् परमात्मा ने इस सृष्टि की रचना जड़–चेतन, गुण–दोषों के संयोग से की है। परमात्मा की बनाई इस सृष्टि में गुण भी हैं और दोष भी। पर हम साधकों को गुणों को धारण करना है और अवगुणों का परित्याग करना है। इसलिए आइए, जानते हैं कि वे कौन–कौन से गुण हैं जो हमें वास्तव में एक सच्चे गुरू का सच्चा शिष्य बनाते हैं–

साकारात्मकता

एक शिष्य हमेशा सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण होता है। वह नकारात्मकता में भी सकारात्मकता ही देखता है। जेम्स एलन अपनी किताब, 'As a man thinketh' में लिखते हैं– 'मनुष्य का मन एक बगीचे की तरह होता है। अगर आप उसमें सुन्दर फूल नहीं उगाएँगे, तो खरपतवार खुद ही उग जाएगी।' कहने का भाव कि यदि आप सकारात्मक विचारों की खेती नहीं करते, तो नकारात्मक विचार स्वतः ही उगकर आपको नष्ट कर देंगे।

वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि प्रकाश की किरणों की गति एक लाख छियासी हज़ार मील प्रति सैकेंड होती है। परन्तु इससे भी अधिक विचारों की गति है। मन के विचारों पर सवार होकर आप पल भर में एक लोक से दूसरे लोक की सैर कर सकते हैं। मिल्टन के शब्दों में कहें तो–'मन के विचार में स्वर्ग को नर्क और नर्क को स्वर्ग में बदल सकते हैं। अंतर केवल दिशा का है।' परन्तु एक सच्चे शिष्य का क्या जज़्बा होता है, उसे विख्यात लेखक इमर्सन ने बखूबी लिखा–'यदि मुझे नर्क में रखा जाए, तो मैं अपने सद्गुणों के कारण वहाँ भी स्वर्ग बना दूँगा।' ऐसी होती है, एक शिष्य की सकारात्मकता!

एक बार युवाओं को इसी विषय में समझाते **गुरूदेव आशुतोष महाराज जी** ने एक सच्ची घटना सुनाई। महाराज जी ने बताया कि एक बार जापान पर किसी दूसरे देश ने अपना अधिपत्य स्थापित करने के लिए उस पर आक्रमण कर दिया। जब जापान के राजा को यह पता चला, तो उसने अपने मंत्रियों की सभा बुलाई। सेनापति ने बताया कि शत्रु राज्य की सेना उनकी सेना से संख्या व शस्त्रों में कईं गुणा अधिक है। महामंत्री ने भी कहा–'राजन्, शत्रुओं के पास हर वस्तु दुगुनी है। चाहे वह अस्त्र–शस्त्र हो या अश्व, हाथी, सेना आदि। हमारे पास तो हर चीज़ कम है। अतः समझदारी इसी में हैं कि हम उनसे युद्ध न करें। यह जानते हुए कि हमारी हार निश्चित है, हमें अपने देश के लोगों को मृत्यु के मुख में नहीं धकेलना चाहिये। अब आत्म–समर्पण ही एकमात्र रास्ता है।' राजा को सभासदों की बात ठीक लगी। परन्तु कोई भी बड़ा निर्णय लेने से पहले वह राजगुरू से पूछा करता था। फिर उनका ही निर्णय अंतिम निर्णय माना जाता था। इसलिए राजा ने राजगुरू को बुलावा भेजा और फिर उनके समक्ष सारी परिस्थिति रखी। राजगुरू ने सारी बात बड़े धैर्य से सुनी और फिर बोले–'वास्तव में स्थिति बहु गंभीर है। युद्ध करना चाहिये या नहीं, इसका निर्णय मै, तुम या तुम्हारे मंत्री लेने में अक्षगाम हैं। अब तो प्रभु की इच्छा ही हमारे लिए आखिरी फैसला होगी।' इतना कहकर राजगुरू ने अपने पास से एक सिक्का निकाला। उसे देखकर बोले– 'राजन्, प्रभु की इच्छा जानने के लिए मै। इस सिक्के को हवा में उछालूँगा। यदि Head आएगा, तो हम युद्ध करेंगे। यदि Tail आया, तो युद्ध नहीं करेंगे।' सिक्का उछाला गया और Head आया। राजगुरू ने कहा– 'अब भय की कोई बात नहीं है। प्रभु की कृपा से हमारी जीत निश्चित है। इसलिए युद्ध की तैयारी करो! सारी सेना को युद्ध करने के लिए उत्साहित करो।'

जब सेना कूच करने वाली थी, तो राजगुरू ने कहा– 'युद्ध में जाने से पूर्व हमारे राज्य में जो पौराणिक मंदिर है, उसमें सैनिकों को अवश्य ले जाना। ईश्वर का आशीर्वाद लेने पर विजयश्री अवश्य कदम चूमेगी।' राजा ने ऐसा ही आदेश पारित कर दिया।

युद्ध आरंभ हुआ। जापान सैनिकों ने पूरे उत्साह व उमंग से युद्ध लड़ा। न किसी में कोई भय था न संदेह। सभी जीत को लेकर आश्वस्त थे। इतिहास बताता है कि तब एक अद्भुत घटना घटी। जापान की छोटी सी सेना ने दुश्मन राजा की अपार सेना को नाकों चने चबा दिए। जापान की विजय हुई। जब हर्षोल्लास के साथ राजा सेना सहित वापिस लौटा, तो राजगुरू ने राजा को वही सिक्का दिखाया। राजा हैरान रह गया क्योंकि उस सिक्के में Tail तो था ही नही दोनों तरफ Head ही था।

गुरू महाराज जी ने यह दृष्टांत सुनाकर कहा– इसलिए हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। सकारात्मकता से आप असंभव दिखने वाले कार्य को भी संभव कर सकते हैं।

कर्मठता :

एक शिष्य कर्मठ होता है। यूरोप के एक दार्शिनिक हुए हैं– हर्बर्ट स्पंसर। उन्होंने जीवन के दो आयाम बताए। पहला–जीवन की लम्बाई। दूसरा– जीवन की चौड़ाई। जीवन की लम्बाई का मतलब व्यक्ति की आयु से है। एक मनुष्य जितने समय के लिए जीता है, वह उसके जीवन की लम्बाई है। सभी चाहते हैं कि उनका जीवन लम्बा हो यानी दीर्घायु हो। पर कभी सोचा है कि हम लम्बा जीवन क्यों चाहते हैं? इसलिए कि हम अपनी सारी कामनाओं, इच्छाओं को पूर्ण कर सकें। मात्र एंन्द्रिक सुख को ही आज का इंसान अपने जीवन का आधार मानता है। परन्तु ऐसे जीवन को महापुरूषों ने पशुवत् जीवन की संज्ञा दी।

इसलिए केवल लम्बी आयु जीवन का आदर्श नहीं है। जीवन का दूसरा आयाम, जो कि चौड़ाई है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण है। चौड़ाई यानी इस जीवन अवधि में आपने अपना कितना विस्तार किया। अपने मन, चित्त और आत्मा का कितना उत्थान किया कितना सक्रिय, कर्मशील, मेहनती, ईमानदार और नेकी भरा जीवन व्यतीत किया। महान वैज्ञानिक आइंस्टीन का कहना था– 'महत्त्वपूर्ण यह नहीं है कि एक मनुष्य का जन्म कब हुआ और वह कब मृत्यु को प्राप्त हुआ। बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि इस अन्तराल के भीतर उसने क्या किया।' अर्थात् जन्म और मृत्यु के बीच जो मनुष्य को समय मिला, जिसे हम जीवनकाल कहते हैं, उस समय का उसने कितना सदुपयोग किया।

एक शिष्य इस बात को हमेशा स्मरण रखता है। वह हनुमान जी जैसी कर्मठता, सजगता को धारण करने का प्रयास करता है। उसके जीवन में न आलस्य होता है, न प्रमोद! न वह रोगी होता है, न निर्बल। वह भीरू होता है, न लापरवाह!

अपवित्र कल्पना भी उतनी बुरी होती है, जितनी कि अपवित्र कर्म। –'स्वामी विवेकानन्द'

गुरूदेव श्री आशुतोष महाराज जी अक्सर कहते हैं कि दृढ़ निश्चयी और संकल्पवान व्यक्ति तूफानों के रूख को भी बदल सकता है। एक बार एक शिष्य ने महाराज जी से पूछा– 'संकल्पवान कैसे बना जाता है?' महाराज जी ने कहा– 'संकल्प दो प्रकार के होते हैं। एक संकल्प वह होता है, जिसमें किसी अहित की कामना छिपी होती है। दूसरा होता है शिव संकल्प– जो कल्याणकारी है, सृजनात्मक है, जिसमें श्रेष्ठ चिंतन है, मंगलमय सोच है। एक साधक का ऐसा ही शिव संकल्प होना चाहिये। ऐसे दृढ़ निश्चयी साधक विपरीत परिस्थितियों से घबराते नहीं, क्योंकि वे जान जाते हैं कि विपत्तियों का जीवन में आना **'पार्ट ऑफ लाइफ'** है और उन विपत्तियों में भी मुस्कुराते हुए शांति से बाहर निकल आना **'आर्ट ऑफ लाइफ'** है।'

पर वही संकल्प का स्थान यदि विकल्प ले ले, तो एक साधक मार्ग से भटक जाता है। उस लोमड़ी की तरह जो अंगूर खाने के लिए दृढ़ता से आगे बढ़ी। पर अंगूर के गुच्छे तक पहुँच न पाई और विकल्प निकाला कि अंगूर खट्टे हैं। लेकिन जो साधक संकल्पवान व दृढ़ निश्चयी हैं, वे अध्यात्मक के मार्ग पर अंत तक चलते हैं– संत सुकरात की तरह। मृत्यु दंड सुनाते समय जज ने सुकरात से कहा– 'यदि तुम सत्य का प्रचार करना बंद कर दो, तो तुम्हें जीवन दान दिया जा सकता है।' सुकरात ने कहा– 'जीवन छोड़ सकता हूँ, परन्तु सत्य को नहीं। क्योंकि सत्य का मूल्य जीवन से अधिक है। भले मरना पड़ जाए, पर अनुसरण सत्य का ही करूँगा।' एक सच्चे शिष्य की भी अपने गुरू के चरणों में यही प्रार्थना होती है–

गुरूवर तुम्हारे पावन पथ पर, हो ये अर्पित जीवन सारा।
बढ़े चलें हम रूकें कभी न, हो ये दृढ़ संकल्प हमारा।।

धैर्यवान :

शिष्य के भीतर अथाह धैर्य होना चाहिए क्योंकि धैर्यवान व्यक्ति ही अपने जीवन में जीत हासिल करता है, सफलता को प्राप्त करता है।

एक बार एक योगी वन में बैठकर कठोर साधना कर रहे थे। इतनी कठोर कि जिस शिला पर बैठे थे, उस पर भी निशान पड़ गए थे। एक दिन एक व्यक्ति उनसे मिलने आया योगी उस समय वहाँ पर नहीं थे। व्यक्ति की दृष्टि जैसे ही उस शिला पर पड़ी, वह सोचने लगा– 'इन योगी महाराज की साधना अवश्य सफल हो गई होगी।' तभी आकाशवाणी हुई– 'नहीं, अभी तो इसकी साधना को फलीभूत होने में बहुत समय लगेगा।' जैसे योगी वहाँ पहुँचे, उस व्यकित ने उन्हें ज्यों की त्यों आकाशवाणी सुना दी। पर यह क्या? योगी तो शोकाकुल होने के स्थान पर हँसने लगे। बोले– 'मुझे इससे फर्क नहीं पड़ता कि मेरी साधना कब स्वीकार होगी? होगी भी या नहीं, क्योंकि स्वीकृति देना, न देना, तो प्रभु के हाथ में है। मुझे तो प्रसन्नता इस बात की है कि प्रभु को यह तो पता है कि उनका एक सेवक उनकी साधना में लीन है' योगी के मुख से ये शब्द निकले ही थे कि तभी आकाशवाणी हुई– 'आज तुम्हारी साधना स्वीकार हुई।' सारतः धैर्य का फल हमेशा मिलता है, जो सदैव मीठा हुआ करता है।

मुझे स्मरण है, एक बार **गुरूदेव श्री अशुतोष महाराज जी** ने कहा था– 'गुरू शिष्य के धैर्य की परीक्षा नहीं लेते, बल्कि असीम धर्य की परीक्षा लेते हैं। इसलिए हमें परम धैर्यवान साधक बनना होगा।' तभी तो किसी ने खूब कहा–

रख हौसला वो मंज़र भी आएंगे,
प्यासे के पास चलकर समंदर भी आएगा।
थक कर न बैठ ऐ मंज़िल के मुसाफिर,
मंज़िल भी मिलेगी और मिलने का मज़ा भी आएगा।

सज्जनो, एक शिष्य के भीतर इन सभी गुणों का जन्म, साधना कहते हैं– 'ध्यान की प्रक्रिया एक ड्रॉपर की भाँति है, जिससे साधक ईश्वर के गुणों को बूँद–बूँद करके अपने चरित्र में उतारता है।' अतः हमें भी साधना की प्रक्रिया के द्वारा इन गुणों को अपने आचरण में उतारना होगा। तभी हम सच्चे शिष्य बन पाएँगे।

जाटों के बारे में विद्वानों व इतिहासकारों के मत

1. जब भी जाटों में एकता हुई तब संसार की कोई जाति बहादुरी में इनका मुकाबला नहीं कर सकी। – (हैरोडोटस)

2. जिन जाट वीरों के प्रचंड पराक्रमों से एक साथ एक समय सारा संसार कांप गया था। आज उनके वंशज राजपुताना और पंजाब में खेती करके गुजारा करते हैं। – (कर्नल टाड)

3. दिल्ली के आसपास चारों तरफ एक ऐसी महान बहादुर कौम बसती है। वह यदि आपस में मिल जाए तो जब चाहे दिल्ली पर कब्जा कर सकती है। – (पं. जवाहर लाल नेहरू)

4. पार्वती के पूछने पर महादेव जी ने कहा ये जट्ट महाबलशाली, अत्यंत वीर्यवान एवं प्रचंड पराक्रमी हैं। सृष्टि के आरंभ में समस्त क्षत्रियों में यह जाति सर्वप्रथम शासक हुई। – (देव संहिता)

5. प्रत्येक जाट व्यक्तिगत रूप से स्वछन्द, मनमोजी और स्वाभिमानी होता है। मनमानी करना और आन की खातिर अपना घर बिगाड़ना इसके लिए हंसी का खेल है। जाट के स्वभाव में वचन पालन में दृढ़ता, पराक्रम में अटलता और प्रतिशत में प्रबलता है। – (डा. रणजीत सिंह)

6. जाटों को प्रेम से वश में करना जैसा सरल है, आंख दिखाकर दबाना उतना ही कठिन है। (पं. इंद्र विद्यावाचस्पति)

7. जाटों का इतिहास है और इसी तरह रेजिमेंट का इतिहास भारतीय सेना का इतिहास है। सदियों से ये अपने स्वतंत्रता प्रेम के लिए मशहूर हैं। इनकी आजादी पंसदी और आजादी के लिए मर मिटने से इतिहास भरा पड़ा है। पश्चिम में फ्रांस से लेकर पूर्व में चीन तक जाट, बलवान, जयभगवान का राजघोष गूंजता रहता है। – (भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन)

साधू की जाति ना पूछो, ज्ञान पूछो। तलवार का मोल करो, म्यान को पड़ा रहने दो। –'कबीर दास'

किसान, खाद्य सुरक्षा और महंगाई का मुद्दा- किसान संकट में क्यों?

कृष्ण प्रताप सिंह

Hkkjr fuek.k का एक विज्ञापन दावा करता है कि मनमोहन सिंह की सरकार ने ज्यादातर कृषि उपजों के समर्थन मूल्य दोगुने कर दिए हैं जिससे प्रोत्साहित होकर किसानों ने उत्पादन में इतनी वृद्धि कर दी है कि देश खाद्य सुरक्षा के दौर में पहुंच गया है। विज्ञापन में इस तथ्य का जिक्र नहीं है जिस अवधि में समर्थन मूल्यों को दोगुने किये जाने की बात कही जा रही है, उस दौरान उपज में वृद्धि के लिए जरूरी बीज, उर्वरक, कीटनाशक और बिजली या डीजल के सिंचाई पर आने वाली लागत कितने गुना बढ़ी है और इस बढ़ोत्तरी के अनुपात में किसान लाभ में रहे या नुकसान में? फिर उपजों के दाम बढ़ते जाने से ही किसान सुखी होते हों, तो उन्हें इस सुख के लिए खाद्यान्नों की राज्य प्रायोजित मंहगाई का ज्यादा शुक्रगुजार होना चाहिए जो इधर के बरसों में समर्थन मूल्यों से चार कद्म आगे ही रहती आई है।

सच्चाई यह है कि उपजों के समर्थन मूल्यों और खाद्यान्नों की मंहगाई, दोनों में से किसी एक का लाभ भी किसानों के खाते में नहीं आता। बिचौलियों व बाजार की दूसरी शक्तियों ने सरकार से साठ–गांठ करके किसानों की लाचारी का लाभ उठाने के इतने हथकंडे विकसित कर लिये हैं कि किसान लाभ की कड़ी में कहीं रह ही नहीं गए हैं। अभी हाल तक यह धारणा थी, और बड़े किसान नेताओं तक में थी कि अन्यथा उपभोग की कोई सीमा न मानने वाला देश का शहरी मध्य व उच्च वर्ग खाद्यान्नों की कीमतों में जरा सी भी वृद्धि नहीं चाहता क्योंकि उसको किसानों की जेबों में चार पैसे ज्यादा चले जाना स्वीकार नहीं है।

पर अब साफ हो चुका है कि खाद्यान्न जब तक किसानों के पास होते हैं, उनकी कीमतें बढ़ाने का नाम तक नहीं लेती। जब वे हारकर उनको औने–पौने दाम पर बिचौलियों, व्यवसायीयों या सरकारी एजेंसियों को बेच देते हैं तो उनकी कीमतें ऐसे बढ़ने लगती हैं जैसे कोई वाहन गांव के उबड़–खाबड़ रास्तों से निकलकर सड़क पर आते ही सरपट दौड़ने लगता है। इस गोरखधंधे को समझे बिना कतई नहीं समझा जा सकता कि देश में खाद्यान्नों की महगाई विकरालतम हो चली है, उससे किसान उसका लाभ क्यों नहीं उठा पा रहे? क्यों कर्जे का जाल उनकी आत्महत्या का फंदा बना रहता है?

इस बात को समझने का रास्ता भी इधर से ही है कि मानव जीवन के लिए आवश्यक शिक्षा व स्वास्थ्य आदि की सेवाओं के साथ आटा–दाल व डीजल–पेट्रोल आदि के दाम लगातार क्यों बढ़ रहे हैं और क्यों टीवी, फ्रिज, एसी व कार आदि के दाम उस अनुपात में ऊंचे नहीं हो रहे? क्यों पीछले दो दशकों में खाद्यान्न कई गुने महंगे हो गये हैं और कारें 'सस्ती'? अरसा पहले पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा था कि इसका कारण हम पेटू भारतीयों का कुछ ज्यादा ही खाने लग जाना है। उन्होंने ज्यादा खाने की बात इसलिये कही थी कि इस बात को छुपा नहीं सके कि बड़ी से बड़ी मुनाफाखोरी से भी हमारे देश में कुलांचती उनकी बहुराष्ट्रीय कंपनियों का पेट नहीं भर रहा। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष व विश्व बैंक की शह से दुनिया की अस्सी प्रतिशत अर्थव्यवस्था पर कब्जा कर लिया है और जिस भी विकासशील या अल्पविकसित देश में वे जाती हैं, वहां की सरकारों से साठगाँठ करके इसे और बढ़ाने के फेर में रहती हैं। उन्हीं के दबाव में सरकारों द्वारा ऐसी नीतियां बनाई जाती हैं कि खाद्यान्नों की उत्पादन लागत घटाने के लिए कुछ भी करना संभव न हो सके। उत्पादित खाद्यान्न खुले में सड़ता रहे, पर खाने वालों तक न पहुचे और भूखे लोगों को बताया जाए कि एफडीआई ही अब एकमात्र उम्मीद की किरण है।

जब से देश में भूमंडलीकरण आया है, उपभोग की आवश्यक वस्तुओं की कीमतें तय करने में बाजार की शक्तियों की भूमिका बढ़ती जा रही है। इन शक्तियों द्वारा कभी दूध, कभी दाल, कभी प्याज तो कभी किसी और खाने की चीज के निर्यात या कथित रूप से कमजोर फसल अथवा प्राकृतिक आपदा में उसके नष्ट होने/सड़ने या किसी और बहाने कृत्रिम अभाव पैदा कर दिया जाता है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि ज्यादा उत्पादन की बात कहकर किसानों को ऊंची कीमतें दिलाने या बहुत नीचे न जाने के तर्क से किसी खाद्यान्न को खासी सस्ती दर पर निर्यात कर दिया गया। फिर कुछ ही दिनों बाद कमी या अभाव बताकर कई गुना मंहगी दर पर आयात किया गया। इसकी आड़ में जो खेल होता है, कहने की जरूरत नहीं कि उसमें किस–किसकी जेबें गर्म व हाथ काले होते हैं ?

पुराने अर्थशास्त्री कहते थे कि दाम मांग व पूर्ति के सिद्धांत पर आधारित होते हैं। अब नए अर्थशास्त्री इससे आगे की थ्योरियां निकाल लाये हैं। पूर्ति पर बाजार का नियंत्रण हो तो मांग उपभोगताओं की क्रयशक्ति पर निर्भर करती है। उनके पास क्रय शक्ति न हो या अपनी मांग को नियंत्रित कर सकने की क्षमता हो तो उत्पादक कंम्पनियों द्वारा विलासिता की वस्तुओं के दाम बढ़ाकर अपना मुनाफा बढ़ाने की कोशिश सफल नहीं होती। इसलिये वे दाम बढ़ाकर मुनाफा बढ़ाने की नीति तभी अपनाती हैं जब आश्वस्त हों कि ऐसा करने पर भी मांग घटेगी नहीं। ऐसा सिर्फ आवश्यक वस्तुओं के साथ हो सकता है। विलासिता की वस्तुओं के दाम बढ़ा दिए जाएं तो उपभोक्ता उनकी मांग को नियंत्रित करने की अपनी क्षमता का इस्तेमाल करने लगते हैं। इससे बचने के लिए उत्पादक कम्पनियां जैसे भी बनें, उनके दाम स्थिर रखने के फेर में रहती हैं। कई बार नए उपभोक्ताओं/ग्राहकों की तलाश में वे दाम घटाती हैं। इसमें सरकारी नीतियां भी उनकी मद्द करती हैं।

खाद्य पदार्थों, ईंधन, दवा, चिकित्सा व शिक्षा सेवाओं की मांग में उन्हें महंगी करने के बावजूद खास कमी नहीं आती। इससे उनकी आपूर्ति या विपणन में लगी कंपनियों का मुनाफा बढ़ता ही बढ़ता है। उदाहरण के लिये आटे की कीमत बढ़ाने पर भी उपभोक्ता उसे खरीदने पर मजबूर होंगे क्योंकि उसके बगैर भूख मिटने वाली नहीं है। पर कोलडड्रिक्स के साथ ऐसा नहीं है। इसलिये कोलडड्रिक्स के मामले में निर्माता कंपनियों द्वारा उनका धुंआधार प्रचार करके मांग पैदा करने या बढ़ाने और उसे जीवनशैली का हिस्सा बनाने की राह अपनाई जाती है। जीवनशैली का हिस्सा हो जाने पर उपभोक्ता उसे थोड़ी बढ़ी कीमत पर खरीद लेते हैं।

इस स्थिति को बदले बिना खाद्यान्नों के दामों को किसान हितकारी या खाद्य सुरक्षा को किसान सुरक्षा बनाना संभव नहीं है।

fu/kurk çdV djuk fu/ku gkus ls vf/kd n[knk;h gksrk gSA &çepUn

जाट सभा द्वारा जाट आरक्षण पर सांसद राजकुमार सैनी के विरूद्ध निंदा प्रस्ताव पास किया गया

जाट सभा चंडीगढ/पंचकुला के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा.एम.एस. मलिक, आईपीएस (सेवा निवृत) की अध्यक्षता में जाट आरक्षण पर सभा की कार्यकारणी की मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें सर्वसम्मती से जाट आरक्षण पर श्री राजकुमार सैनी, सांसद द्वारा दिये जा रहे घृणित व जातिगत ब्यानबाजी की पूरजोर निंदा करते हुए प्रस्ताव पास करके उनके सभी सार्वजनिक व क्षेत्रीय कार्यक्रमों का सामाजिक बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। उपस्थित सदस्यों ने एकमत होकर कहा कि राजकुमार सैनी द्वारा जाट आरक्षण पर की जा रही गैर जिम्मेदाराना व राजनीति से प्रेरित घटिया ब्यानबाजी से समाज में साम्प्रदायिक घृणा और जातिवाद फैल रहा है जोकि लोकतांत्रिक व्यवस्था के सर्वथा प्रतिकूल है।

डा0 मलिक ने कहा कि जाट समुदाय सदैव ओ0बी0सी0 कोटे में शामिल सभी 75 जातियों की उनके बुनियादी अधिकारों को प्राप्त करने के लिये हर प्रकार से मदद करता रहा है। यह दुर्भाग्य की बात है कि सांसद श्री राजकुमार सैनी ने अपने निहित स्वार्थो के कारण मात्रभूमि की सुरक्षा व अखण्डता के लिये सर्वोच्च बलिदान देने वाली बहादुर जाट कौम के विरूद्ध जाट आरक्षण रद्द होते ही दुर्भावनापूर्ण प्रचार शुरू कर रखा है। सम्पूर्ण जाट समाज के लिये बेहद संघर्ष से प्राप्त किया गया ओ0बी0सी0 आरक्षण रद्द किया जाना एक दुखदायी घटना है जिससे जाट समाज स्वयं को लूटा हुआ व अपमानित महसूस कर रहा है। नौकरियों में आरक्षण जाटों का नैतिक अधिकार है और हम सरकार से उपहार के तौर पर आरक्षण की मांग नहीं कर रहे हैं।

वास्तव में 27 प्रतिशत आरक्षण कोटा एक किसान कोटा है जोकि जाट वर्ग के अतिरिक्त गुजर, सैनी, अहीर, बिश्नोई, कम्बोज आदि कृषि पर आधारित सभी जातियों के लिये बनाया गया है और जाट वर्ग हमेशा ही इस प्रकार की सभी खेतिहर जातियों के लिए आरक्षण की मांग करता रहा है। जाट समाज उनके मुख्य व्यवसाय-कृषि की लगातार कम हो रही जोतों के कारण सामाजिक शैक्षणिक व आर्थिक तौर से पूर्णतया पिछड रहा है। यह समाज मुख्यतः कृषि पर आधारित है और खेतीबाडी का धन्धा लगातार घटित होने वाली प्राकृतिक आपदाओं तथा कृषि उपज के पर्याप्त दाम न मिलने के कारण एक घाटे का व्यवसाय बन गया है और जाट वर्ग के लिये केवल कृषि से गुजारा करना बहुत मुश्किल हो गया है।

जाट वर्ग के लिए निर्धारित किया गया ओ0बी0सी0 आरक्षण कोटे को रद्द किया जाना इस समाज के साथ सर्वथा भेदभावपूर्ण है। आरक्षण के विषय में भी इस वर्ग के साथ पक्षपात किया जा रहा है जोकि सविधांन की धारा 14 व 16 का सरासर उल्लघंन है। जाट वर्ग का व्यक्ति एक राज्य (राजस्थान) में तो पिछडे वर्ग में आता है जबकि अन्य राज्य में स्वर्ण वर्ग में गिना जाता है। यह वर्गीकरण किसी अन्य जाति/समुदाय में नहीं है और अन्य जातियों को राष्ट्र के सभी राज्यों में एक समान यानी पिछडा वर्ग में माना जाता है। डा0 मलिक ने आगे कहा की आरक्षण के सदंर्भ में जाट कौम को पहले से ही क्रिमीलेयर के अर्न्तगत रखा गया है, इसलिये इस वर्ग की अधिकांश जनसंख्या आर्थिक तौर से निम्न स्तर में आने के कारण काफी दयनीय स्थिति में है।

कार्यकरिणी के सदस्यों ने जाट आरक्षण के लिये संघर्षरत सभी जाट आरक्षण संघर्ष समितियों व खाप पंचायतों को जाट सभा द्वारा हर प्रकार से पूर्ण सहयोग प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। कार्यकारिणी द्वारा सभी राजनैतिक दलों, सामाजिक व स्वयं सेवी संस्थाओं से भी जाट वर्ग को ओ0बी0सी0 आरक्षण दिलवाने हेतु सहयोग प्रदान करने के लिए आह्वान किया गया। कार्यकरिणी द्वारा विशेष तौर से केन्द्रीय सरकार का सर्वोच्च न्यायलय में जाट वर्ग को ओ0बी0सी0 आरक्षण दिलाने के लिये पुनः विचार याचिका दायर करने हेतु आभार व्यक्त किया गया और केन्द्रीय सरकार से इस महत्वपूर्ण विषय की कानून विशेषज्ञों द्वारा पूर्ण जानकारी व पर्याप्त रिकार्ड सहित सर्वोच्च न्यायलय में पैरवी करने की अपील की। इसके साथ ही कार्यकरिणी द्वारा श्री राजकुमार सैनी सांसद के द्वारा जाट वर्ग के प्रति जाट आरक्षण के विषय पर लगातार साम्प्रदायिक और जातिगत ब्यानबाजी करने पर माननीय प्रधानमंत्री तथा बीजेपी आलाकमान को श्री सैनी के विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही करने के लिये शिकायत दर्ज करने का भी निर्णय लिया गया और आवश्यकता पडने पर उनके (श्री सैनी) के विरूद्ध मानहानी का मुकद्दमा दर्ज करने पर भी विचार किया गया।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।